मैं स्वयंभू



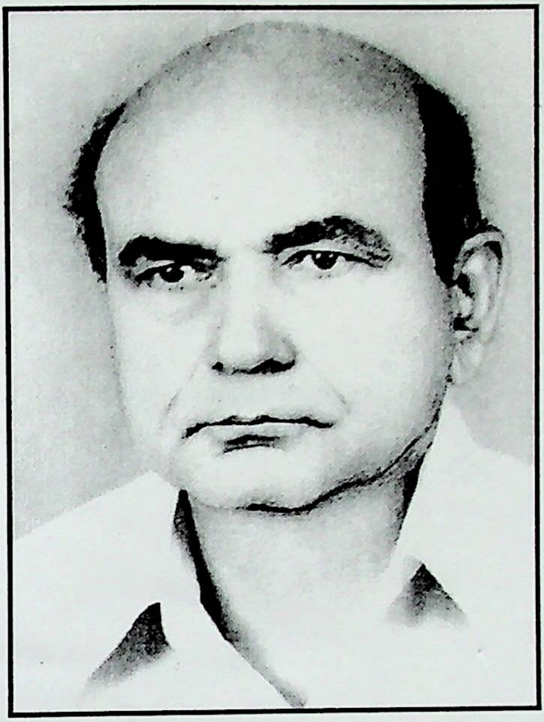
रचयिता : हितेश कुमार शर्मा

गणपति भवन सिविल लाइन, बिजनौर-246701 (उ.प्र.)

परिचय

पिता	: स्व0 श्री मुंशीलाल शर्मा
माता	: स्व0 श्रीमती त्रिवेणी देवी
चाचीजी	: श्रीमती चन्द्रवती शर्मा
पुत्र	: अजय शर्मा
पुत्रवधू	: नीता
पौत्र	: षडज् शर्मा (अरु)
पुत्री	: अर्चना
जामाता	: प्रभात प्रकाश
पुत्री	: संगीता
पुत्री	: नेहा
जामाता	: अजय शर्मा
पुत्री	: निष्ठा
नाती	: कार्तिकेय, अविजित, आंजनेय
नातिन	: पूजा

समर्पण



स्व० सुरेश चन्द्र शर्मा

पुत्र स्व० मुंशीलाल शर्मा की पुण्य स्मृति में
सपर्पित यह पुस्तक।

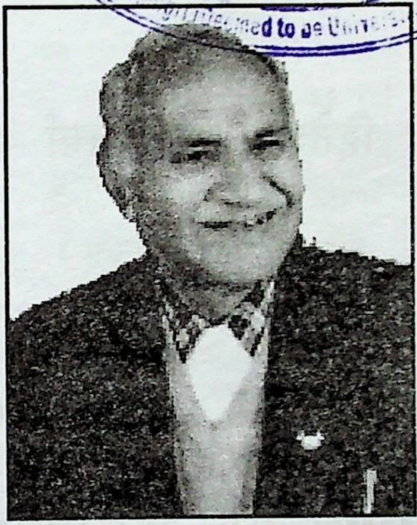
–हितेश कुमार शर्मा
–उषा शर्मा

गणपति भवन, सिविल लाइन, बिजनौर–२४६७०१ (उ.प्र.)

मैं स्वयंभू

मैं स्वयंभू □ 2

मैं स्वयंभू



रचयिता
हितेश कुमार शर्मा
गणपति भवन, सिविल लाइंस, बिजनौर 246701

मैं स्वयंभू

2017
प्रथम संस्करण
मूल्य रु॰ 200/- मात्र प्रति पुस्तक

कवि
हितेश कुमार शर्मा
गणति भवन, सिविल लाइंस
बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰)
फोन : 01342-262085
ई-मेल : kumar1936hitesh@gmail.com

टाइप सैटिंग : हरिओम कश्यप

प्रकाशक
हरिगंगा प्रकाशन गणपति भवन, सिविल लाइंस,
बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰) भारत
मोबाइल : 09319935979,
ISBN : 978-81-929885-9-7

मुद्रक
रवि आफसैट प्रिंटर्स, निकट-रामलीला ग्राउंड, बिजनौर

मैं स्वयंभू : राष्ट्रीय चेतना का शंखनाद

श्री हितेश कुमार शर्मा बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। उन्होंने अनेक साहित्यिक कृतियों का प्रणयन और संपादन किया है। वे राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत साहित्यकार हैं। उनकी नवीन काव्य कृति 'मैं स्वयंभू' में राष्ट्र प्रेम साकार हो उठा है। कवि की वाणी कोरा वाग्जाल नहीं है अपितु उसमें शत्रु को विकंपित करने वाली ललकार है, देशवासियों की सुप्त चेतना को झकझोरने वाली प्रलंयकारी हुंकार है तथा समाज को सचेत करने वाली ओजपूर्ण पुकार है। 'मैं स्वयंभू' का रचनाकार निर्बल की कायरतापूर्ण अहिंसा का नहीं अपितु सबल के स्वाभिमान संपन्न मानवतावाद का समर्थक है।

हितेश जी को राष्ट्र की संतान होने का गर्व है। वे भारतीय संस्कृति और सभ्यता के संवाहक हैं। वंदे मातरम के प्रति उनकी आस्था है। कवि ने मध्यकालीन अप्रतिम योद्धाओं महाराजा प्रताप और छत्रपति शिवाजी के साथ-साथ आधुनिक काल के महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू, लोकमान्य तिलक, लक्ष्मीबाई, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, नेताजी सुभाष, सरदार पटेल आदि अनेक स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का भावपूर्ण स्मरण किया है।

कवि राष्ट्र की सुप्त चेतना को झकझोर कर भारतवासियों को जगाना चाहता है। वह रास-रंग के स्थान पर रूद्राभिषेक तथा बाँसुरी वादन के स्थान पर गांडीव, गदा और त्रिशूल को हाथ में उठाने का आह्वान करता है। 'बाहुविशाल उठो' कविता में उसका कथन है—

अब रास न हो यमुना तट पर, रुद्राभिषेक हो हर घर में,
बासुरी नहीं, गांडीव, गदा, त्रिशूल, बघनखा हो कर में।

हितेश जी की दृष्टि में जब हम आतंकवाद, उग्रवाद एवं नक्सलवाद का समूल विनाश कर देंगे, तभी 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना सच्चे अर्थों

में साकार हो सकेगी। विधि की कैसी निर्मम विडंबना है कि कश्मीर में भारतीय सैनिकों के प्रति हिंसा करने वालों पर भी ठोस कार्रवाई नहीं हो पाती। 'निष्काम' शीर्षक कविता में कवि की मंगलकामना है–

विश्वगुरु बनकर भारत अब, बाँटे सकल विश्व में ज्ञान।
जब तक यह सब सिद्ध नहीं हो, तब तक है आराम हराम।

कवि भ्रष्टाचार मिटाने के लिए कटिबद्ध है। वह 'जनता जाग्रत हो गई' कविता में धर्म एवं वर्ग के भेद भूलकर स्वदेश-हित हेतु कर्त्तव्यनिष्ठ होने का पावन संदेश देता है–

जागे जनता देश की, जागे हिन्दुस्तान।
धर्म, वर्ग सब भूलकर, एक रहे अभियान।

संप्रति राष्ट्रभक्ति का वह स्वर्णिम विहान कहीं दृष्टिगोचन नहीं होता, जिसके क्षितिज पर निस्पृह बलिदान की अरुणिमा चतुर्दिक विकीर्ण होती थी और जनसामान्य को अनायास ही कर्त्तव्य-पालन एवं त्याग के आदर्शों से भर देती थी। हितेश जी की 'कहाँ है' कविता में भी यही वेदना परिलक्षित होती है–

जंगे आजादी में जो भी, जोश था वह अब कहाँ है।
देशहित जो देशभक्ति होश था, वह अब कहाँ है।
देश दुश्मन के प्रति जो रोष था, वह अब कहाँ है।

हितेश जी के ओजस्वी शंखनाद में आत्मबलिदान की हुंकार है। वे अब आतंकी, घुसपैठिये और उनके सहायकों को मार डालने का प्रण लेते हैं। कायरता के कल्मष को मिटाकर, मातृभूमि के बैरियों का शिरोच्छेदन करने वाला कवि विश्वासघातियों के उन्मूलन हेतु भी तत्पर है। काव्य संग्रह की 'मैं स्वयंभू' शीर्षक कविता कायर व्यक्ति में भी उष्ण रक्त का संचार करने में समर्थ है–

मैं तुम्हें सम्मान दे सकता हूँ लेकिन,
कठिन है मेरे लिए अपमान सहना।
मैं करूँगा घात पर प्रतिघात निश्चित,
क्षमा कर दूँ, इस भुलावें में न रहना।

इस समूचे विश्व में तुमको बता दूँ।,
मातृभूमि और माँ सर्वोपरि है।
उसे मेरी शत्रुता सहनी पड़ेगी
आँख जिसने भी इधर टेढ़ी करी है।

हाथ में केवल कलम है, किन्तु प्रियवर
शस्त्र भी मेरा कहीं गिरवीं नहीं है।

कवि पर्यावरण का सजग प्रहरी है। जल के असीमित दोहन और वनों के अंधाधुंध कटान से जहाँ एक ओर पर्यावरण प्रदूषित हुआ है, वहीं दूसरी ओर भूमि बंजर हो गई है, जो मानव के लिए चिन्ता का विषय है। कवि इस आसन्न संकट के प्रति सचेत करते हुए 'वहाँ वर्षा नहीं होती' शीर्षक कविता में लिखता है–

हमीं ने वायुमंडल को विषैला कर दिया यानी।
असीमित खर्च कर डाला धरा से खींचकर पानी।
सघन वन काट डाले, कर दिये नंगे सभी पर्वत।
सकल भूमि हुई बंजर, जो सदियों से रही धानी।

अनाचार-अत्याचार का शमन रोने-धोने अथवा गिड़गिड़ाने से नहीं होता अपितु शक्ति द्वारा ही उसका निराकरण संभव है। दुष्ट प्रकृति बिना ठोकर लगे दुष्कर्मों से विरत नहीं हो सकती। 'शठे शाठयम् समाचरेत' के सिद्धांत का समर्थन करते हुए कवि 'बदलना चाहिए' शीर्षक कविता में लिखता है–

शठे शाठयम का यही सिद्धांत है,
जो करे छल, उसे छलना चाहिए।
व्यर्थ है मौखिक-लिखित करना विरोध,
शास्त्र को शस्त्रों में ढलना चाहिए।

काव्य-संग्रह की 'अंगद हूँ प्रभु श्रीराम जी का' कविता में भी कवि की यही धारणा परिलक्षित होती है–

मैं कि केवल शास्त्र का ज्ञाता नहीं हूँ,
शस्त्र भी हूँ, तीर भी तलवार भी हूँ।
शत्रु को मैं सिर्फ शत्रु मानता हूँ,
शठे शाठयम् सिद्ध है सिद्धांत मेरा।

हिन्दी प्रेमी कवि की पीड़ा यही है कि अड़सठ वर्ष बाद भी हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं बन सकी। (पंद्रह अगस्त पृ. 60) वह शक्ति का उपासक है। अत: उसकी स्पष्ट धारणा है– 'चल त्याग कलम को तू हितेश' कविता में

अब वही बचेगा धरती पर, जो सर्वश्रेष्ठ है शक्तिमान।
चल त्याग कलम को तू हितेश, ले अपने कर में धनुष बान।

जनसाधारण की पीड़ा से उद्वेलित हितेश जी स्वदेश में न्याय के सुलभ एवं सस्ता होने, शिक्षा और चिकित्सा की सुव्यवस्था होने तथा निर्धनों के होठों पर मुस्कान खिलने की कामना करते हैं। ऐसा होने पर ही भारत सच्चे अर्थों में स्वतंत्र होगा तथा स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के स्वप्न साकार होंगे) संग्रह की 'जिन्दाबाद कहूँगा' कविता में कवि की यह मानवतावादी कामना अत्यन्त मनोरम है–

जब स्वदेश में न्याय देश का, सुलभ और सस्ता होगा।
शिक्षा और चिकित्सा का जब, हाल नहीं खस्ता होगा।
जब गरीब की झोपड़ियों में, भी बचपन हँसता होगा।
उस दिन इन्कलाब को मैं भी, फिर से जिन्दाबाद कहूँगा।
भारत को आजाद कहूँगा।

हितेश जी ने उन कश्मीरी पंडितों की पीड़ा को भी वाणी दी है, जिनके दुख-दर्द मानवतावाद की ओट में लोगों की आँखों से ओझल हो चुके हैं। वे धार्मिक भेदभावों को समाप्त करने के पक्षपाती हैं तथा फूलों के साथ-साथ काँटों को भी स्वीकार करने के समर्थक हैं। 'स्वीकार करो' कविता में उनका कथन है–

फूलों में जीवन का सुख है, शूलों में अनुभव की छाया।
अनुभव की राहों पर चलकर, सपनों को साकार करो।

कवि पूजागृहों की तुलना में बलिदानी वीरों के देवालय को अधिक महत्व देता है। उसकी दृष्टि में वीर सैनिकों का अभिनंदन सर्वथा वरेण्य है। 'जिन्दाबाद' कविता में कवि लिखता है–

अभिवादन है हर सैनिक का, हर सैनिक का अभिनंदन।
भारत का हर देशभक्त, हर क्षण करता इनका वंदन।

समग्रत: 'मैं स्वयंभू' काव्य-संग्रह उत्कृष्ट राष्ट्रीय काव्य है। मेरा विश्वास है कि राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के 'हुंकार' तथा राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी के 'भैरवी' काव्य संग्रह की परंपरा में रचित यह काव्य संग्रह हिन्दी पाठकों के मध्य समाहत होगा। अंत में प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री हितेश कुमार शर्मा के प्रति मेरी मंगलकामना है–
वाग्देवि की कृपा से विद्या का वरदान मिला,
काव्य-सागर उमड़ा हृदय हिलोरों से।
काव्यानंद पाके मुदित हुए सहृदयजन,
काव्य-रस टपका लेखनी की नोक से।

वर्षा धाराओं से धवलित हो चहुँओर।
काव्याकाश चमक उठा सतरंगी रंगों से।
साधना सफल हो हितेश की उसी तरह,
भक्त तप फलित हुआ इष्ट-वरदान से।

–डॉ. चन्द्रप्रकाश आर्य
अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
वर्धमान कालेज,
हिन्दी शोध संस्थान,
बी-14, नई बस्ती, बिजनौर (उ.प्र.)

प्राक्कथन

मैं स्वयंभू शत्रुओं को ललकारने वाली कविता है, जो इस पुस्तक का नाम रखा गया है, वास्तव में भारतवर्ष को कुछ ऐसी शिक्षा दी गई। ऐसा वातावरण तैयार किया गया कि यहाँ के व्यक्ति अपमानित होकर चुप बैठने लगे। शाब्दिक हमलों में सबसे आगे और शारीरिक हमलों में अहिंसात्मक बन गए। बड़ी जोर-शोर से अहिंसा का प्रचार हुआ। तत्पश्चात गाँधीजी का युग आया और उसमें भी एक गाल पर थप्पड़ खाओ तो दूसरा गाल आगे कर दो जैसी गाँधीगिरी का प्रचार हुआ। शनैः शनैः भारतवर्ष अहिंसात्मक या यों कहिए कायर होता चला गया और इसी कायरता के कारण सन 1947 से पहले बँटवारा माँगने कीशृंखला में कई हजार हिन्दुओं का कत्लेआम कर दिया गया। उसके बाद बँटवारा हुआ और बँटवारे के बाद भी महात्मा गाँधी ने अपने झूठे अहम् को जिन्दा रखने के लिए अल्पसंख्यकों को हिन्दुस्तान में ही रोक लिया और इस प्रकार बँटवारे के बाद एक विष वृक्ष हिन्दुस्तान की धरती पर रोप दिया गया, जिसके परिणाम यदा-कदा देखने को मिलते हैं। इतिहास गवाह है आज तक कभी यह नहीं सुना गया या लिखा गया कि बहुसंख्यकों ने हमला करके अल्पसंख्यकों को मार दिया। आतंकी भी जो पकड़े गए वह भी पाकिस्तान से भेजे गए अथवा काश्मीर में पैदा हुए अल्पसंख्यक ही रहे किसी भी प्रकार से बहुसंख्यक हमलावर की श्रेणी में नहीं आया। सदैव बचाव का प्रयास करता रहा और इसी बचाव में पिटता रहा और कहता रहा– **अबकी मारे तो जानू।** और हर बार पाकिस्तान हमला करता रहा। हमारी सेनाएँ जीतने के बाद भी हारती रहीं। काश्मीर का बहुत सारा हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में चला गया क्योंकि तत्कालीन प्रधानमंत्री जी ने सेनाओं के बढ़ते कदम रोक दिए थे। अधिक शब्दों की बात नहीं मुख्तसर बात यह है कि अल्पसंख्यक सदैव

हमलावर रहा और बहुसंख्यक बचाव करने की स्थिति में भी नहीं रहा। मुकाबला तो क्या करता। परिणाम क्या हुआ सदैव हर झगड़े में बहुसंख्यक ही मारे गए। मैं अहिंसात्मक प्रणाली से सहमत नहीं हूँ। मैं बचाव की कार्यवाही को उचित नहीं मानता, जो हम पर हमला करता है, उसे पृथ्वीराज चौहान की तरह क्षमा कर देने की प्रवृत्ति भी मेरे मस्तिष्क में नहीं बैठती। मैं हमलावर को नेस्तनाबूत करने की बात करता हूँ। मैं हमलावर को उसी के शब्दों में जवाब देना चाहता हूँ और यही मेरी कविता स्वयंभू का भाव है। इस संकलन में सभी कविताएँ राष्ट्रप्रेम की हैं। शठे शाठयम् से प्रभावित भावों की हैं। कायरता की बात सिखाने वाली कोई कविता नहीं है।शृंगारिक कविताएँ मैंने पहले भी बहुत कम लिखी है, इस संकलन में तो हैं ही नहीं। हिन्दी के सन्दर्भ में उसे राष्ट्रभाषा बनाने के समर्थन में लिखी गई कविताएँ आपसी फूट से छुटकारा दिलाने के लिए लिखी गई कविताएँ इस संकलन में रखी गई हैं। काफी कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुई हैं।

मैं आभारी हूँ डॉ. चन्द्र प्रकाश आर्य का जिन्होंने इस पुस्तक की भूमिका लिखकर अपने स्व. पिता डॉ. रामस्वरूप आर्य को जीवन्त कर दिया है। मेरी बहुत सारी पुस्तकों की भूमिका स्व. डॉ. रामस्वरूप आर्य द्वारा लिखी गई और वह मुझे बहुत प्रोत्साहित करते थे तथा मेरी रचनाओं की प्रशंसा करते थे। मैं आभारी हूँ अपनी धर्मपत्नी उषा शर्मा का जो समय-समय पर मुझे सुझाव देती रहती हैं और रचनाओं के बारे में बात करती हैं। यदि मैं हरिओम कश्यप का आभार व्यक्त नहीं करूँगा तो यह मेरे लिए बहुत अनुचित होगा। इस पुस्तक की साज-सँवार, कविताओं को टाइप करना आदि सभी कार्य हरिओम कश्यप ने किए हैं, मैं उसके प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। पुस्तक का प्रकाशन बहुत सूझ-बूझ के साथ किया गया है, जिसके लिए मैं श्री रवीन्द्र शर्मा स्वामी रवि आफसैट प्रिन्टर्स, बिजनौर का आभारी हूँ।

अन्त में आभार व्यक्त करूँगा उन सभी का जिन्होंने मेरी कविताओं को

पढ़ा और सराहा। कहीं-कहीं कविता व्यक्तिगत हो गई है। वह भी भावनाओं का प्रवाह है। मुझे आशा है कि यह संकलन भी अन्य पुस्तकों की भाँति मेरे मित्रों को, सहयोगियों को, पाठकों को पसन्द आएगा। मैं चाहूँगा कि इस पुस्तक को पढ़ने के बाद मेरे मित्र, सहयोगी और पाठक मुझे दो शब्द अवश्य लिखे। यह पुस्तक मैंने स्व॰ सुरेश चन्द शर्मा पुत्र पं॰ मुंशीराम शर्मा, मूल निवासी ग्राम मोरजपुर (बुलन्दशहर), व्यवसायिक क्षेत्र मेरठ तथा वर्तमान निवास स्थान कानपुर रहा। स्व॰ सुरेश चन्द शर्मा ने मेरे जीवन में उषा का उजाला भर दिया, जिसके फलस्वरूप घर-घर न रहकर एक सुख, आनन्द और स्मृद्धि प्रदान करने वाला स्वर्ग समान स्थान बन गया। मेरे श्रद्धासुमन मेरा अभिनन्दन स्व॰ श्री सुरेश चन्द शर्मा के प्रति सदैव रहा है वह सदैव मेरी स्मृति में रहे है और जब तक हम और उषा धरती पर हैं, तब तक वह हमारी स्मृति में रहेंगे।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर अपने साहित्यिक गुरुद्वै स्व॰ डॉ॰ रामस्वरूप आर्य तथा स्व॰ राजन चौधरी के चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए यह पुस्तक पाठकों के समक्ष लोकार्पित।

दिनांक ०९.०७.२०१७ **–हितेश कुमार शर्मा**

गणपति भवन, सिविल लाइन,
बिजनौर (उ.प्र.)

अनुक्रमणिका

मैं हिन्दुस्तान हूँ

गर्व से बोलो, कहो, मैं राष्ट्र की सन्तान हूँ।
मैं कि हिन्दू राष्ट्रवादी हूँ, मैं हिन्दुस्तान हूँ।

ढोंग तुष्टिकरण का, मैं मित्र कर सकता नहीं।
देश पर बलिदान हो सकता हूँ, झुक सकता नहीं।
चल पड़ा यह विजय रथ मेरा, तो रूक सकता नहीं–
सोचकर निर्भीकता से जो कहा सच ही कहा।
झूठ था वक्तव्य मेरा, कोई कह सकता नहीं।

मैं तिरंगे की समूचे विश्व में पहचान हूँ।
गर्व से बोलो, कहो, मैं राष्ट्र की सन्तान हूँ।

संस्कृति का, सभ्यता का एक सम्वाहक हूँ मैं।
मत समझना राजनीति में, खड़ा नाहक हूँ मैं।
मातृभूमि को समर्पित– जैसा जिस लायक हूँ मैं–
देशद्रोही के लिए मैं, चक्र हूँ घनश्याम का।
देशभक्तों की सुरक्षा के लिए, नायक हूँ मैं।

देशहित में महाराणा हूँ, शिवा की आन हूँ।
गर्व से बोलो, कहो, मैं राष्ट्र की सन्तान हूँ।

छल-कपट मुझको नहीं आता, बहुत स्पष्ट हूँ।
देश के उत्थान की बाधाएँ, करता नष्ट हूँ।
मैं न व्यभिचारी, न रिश्वतखोर हूँ, ना भ्रष्ट हूँ–
हर अनर्गल बात का, संज्ञान मैं लेता नहीं।
जो छुपे गद्दार हैं, उनके लिए मैं कष्ट हूँ।

भगत सिंह, अश्फाक, बिस्मिल की तरह बलिदान हूँ।
गर्व से बोलो, कहो, मैं राष्ट्र की सन्तान हूँ।

विश्व में गूँजेगा, भारतघोष, वन्दे मातरम।
साथ में मेरे कहेगा, जो भी वन्दे मातरम।
उसे मैं सम्मान दूँगा, सत्य वन्दे मातरम–
जिनकी निष्ठा मेरे भारत में नहीं है दोस्तो।
उन्हें अनदेखा करूँगा नहीं, वन्दे मातरम।

सोचता मैं देश भारत का सदा उत्थान हूँ।
गर्व से बोलो, कहो, मैं राष्ट्र की सन्तान हूँ।

✸✸

अमर शहीदों-अनगिन बार तुम्हारा वन्दन

अमर शहीदों अर्न्तमन से तुमको अर्पित रोली चंदन,
सौ-सौ बार करूँ अभिनन्दन, अनगिन बार तुम्हारा वन्दन।

जितना भी हम कर सकते हैं, मेरे मित्रों उतना कम है,
आज शहीदों की स्मृति में देखों आँख राष्ट्र की नम है।
जो बलिदान हो गए लेकिन, आजादी को भोग न पाए,
जिन्हें सौंप कर गए, सँभलती उनसे नहीं, इसी का गम है।

पंत, लाजपत राय, भगत सिंह, बिस्मिल, सावरकर, सुभाष को,
आज अश्रुपूरित नयनों से याद कर रहा है जन-जीवन।

तात्या टोपे, रानी झाँसी, नमन आज टीपू महान को,
राजगुरु, सुखदेव, जवाहर, गाँधी, जैसे महाप्रान को।
आज कृतज्ञ राष्ट्र कर रहा, उनकी आत्माओं का वन्दन,
काला पानी भी झेला पर, कभी न रोए प्राणदान को।

मंगल पाण्डे धन्य हो गया, धन्य हुए वह सारे सैनिक,
आजादी की बलिवेदी पर, किया जिन्होंने जीवन अर्पन।

यह आजादी के दीवाने आजादी के लिए मिट गए,
सत्य अहिंसा की राहों पर, लाठी खाई और लिट गए।
मोतीलाल, तिलक गंगाधर, मौलाना आजाद, नायडू-
इनके आगे अँग्रेजों के घुड़सवार, बम, तोप पिट गए।

आजादी की रक्षा के हित प्राण होम कर दिए जिन्होंने,
फाँसी पर जो हँसते-हँसते झूल गए पर किया न क्रन्दन।

भूले बिसरे सभी शहीदों को मन से प्रणाम करता हूँ,
जो चुप-चुप बलिदान हो गए, उनको राम-राम करता हूँ।
बचा रहे यह देश हमारा, गद्दारों से मक्कारों से,
मुक्ति मिले दागियों से, यह चाहत सुबह शाम करता हूँ।

जो आजाद चन्द्रशेखर ने, देकर प्राण हमें सौंपी थी,
उस आजादी की रक्षा को, चलो करें हम पूजा अर्चन।

✱✱

बाहुविशाल उठो

हे रुद्र उठो, हे काल उठो, हे हिमगिरि बाहुविशाल उठो,
भारत की सुप्त आत्माओं, जागो बन जीवन ज्वाल उठो।

अब रास न हो यमुना तट पर, रुद्राभिषेक हो हर घर में,
बाँसुरी नहीं, गांडीव, गदा, त्रिशूल, बघनखा हो कर में।
अनगिन भस्मासुर घूम रहे, सत्ता से अभय दान पाए,
अपहर्ता, आतंकी, डाकू हैं छुपे विधायी परिसर में।

अब रक्तबीज की तरह, अनेकों कंस, अनेकों रावण हैं,
संसद के हर इक खम्भे से बनकर नरसिंह-कराल उठो।

हे पृथ्वीराज चौहान, अशोक महान्, अरे राणा प्रताप,
मिटती अखण्डता भारत की, एकता कर रही है प्रलाप।
आतंकवाद, नक्सलीवाद, यह उग्रवाद, उल्फा निनाद,
इन सबके बीच बँटी, भारत-माता देखो करती विलाप।

वसुधैव कुटुम्बकम् का पौधा, रोपा था भारत ने भू पर,
जो उसे काटता दीख पड़े, उसकी हो तेरह ताल उठो।

हे भगत सिंह, बिस्मिल, सुभाष, हे लौह पुरुष वल्लभ पटेल,
झाँसी रानी, दुर्गाबाई, डालो अब दुष्टों के नकेल।

अब्दुल हमीद, अब्दुल कलाम, किदवई सरीखे देशभक्त,
आओ फिर पकड़ो बागडोर, हो गए सभी सारथि फेल।

अपने इन सब नेताओं में, निर्णय की क्षमता रही नहीं,
सारथि-विहीन रथ की पुत्रों, करनी है तुम्हें सँभाल उठो।

हे-राम, अरे घनश्याम, भीम, अर्जुन, सहदेव, नकुल दौड़ों,
आतंकी आँधी के आगे दीवार बनों, हर भ्रम तोड़ो।
आततायी चाहे जो हो, चौराहे पर दो उसे सजा,
भारत माँ का आह्वान है, शत्रु को जीवित मत छोड़ो।

है कसम तुम्हें भारत माँ के आँसू की, उसके आँचल की,
जो बेच रहे हों देश धरा, उनकी अब खींचों खाल उठो।

**

निष्काम

हम भारतवासी शत्रु को, गले लगाते हैं निष्काम।
अँग्रेजों से मुक्त हुए पर, अँग्रेजी के अभी गुलाम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

राष्ट्रपति के अँग्रेजी के, भाषण पर खुश होने वाले।
हिन्दी के हैं घोर विरोधी, यह मैकाले के सुत काले।
अँग्रेजी में बतियाते हैं, अपने घर में आठो याम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

पा जाते हैं पद्मश्री भी, चाटुकार साहित्यिक चोर।
सत्ता में रहकर हिन्दी के, रहे विरोधी जो घनघोर।
देशभक्त की पूछ नहीं है, दल-बदलु के बढ़ते दाम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

आरक्षण में तुष्टिकरण में, डूब चुका है हिन्दुस्तान।
काश्मीर में पत्थर खाते, हैं भारत के वीर जवान।
फौजों के भी हाथ बाँधकर, उन्हें बना डाला नाकाम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

दलित, दलित कह, दलितसुता ने, जोड़ लिए देखो धन-धाम।
बाईस कमरों के बंगलों में, अब वह करतीं हैं विश्राम।
अभी तलक तो किसी दलित के, आई नहीं जरा भी काम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

न्याय बहुत महँगा भारत में, सुविधाशुल्क दरें ऊँची हैं।
सत्यमेव जयते लिखा था, जहाँ वहाँ फेरी कूँची हैं।
झूठे साक्ष्य दलीलें झूठी, रोज सत्य होता नीलाम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

गैंगरेप रूक नहीं रहे हैं, बलात्कार भी रोज हो रहे।
जली हुई तेजाब काण्ड से, पीड़ित के माँ-बाप रो रहे।
किन्तु छूट गया आरोपी, न्यायालय की जय अभिराम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

शिक्षा और चिकित्सा दोनों, हुई पहुँच से अब बाहर।
जंगल में अब नहीं शहर में, घूम रहे कातिल नाहर।
चोर-उचक्कों की बस्ती में, सज्जन लुटते सुबहो शाम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

रेलों में दुर्घटना होती, बस भी नहीं सुरक्षित कोई।
धन-दौलत, अपनी अस्मत को, जाने कहाँ लूट ले कोई।
कहाँ-कहाँ को दौड़ लगाए, पुलिस बिचारी खोले जाम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

डोरी और कलावा बाँधे, घूम रहे देखों शैतान।
बहुसंख्यक कुल की कन्या को, अगुवा कर लेते हैवान।
करते हैं दुष्कर्म बाद में, कर देते हैं काम तमाम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

मुगलों ने जो किए थे अत्याचार उन्हें हम भूल गए।
देशभक्त कितने अँग्रेजों द्वारा फाँसी झूल गए।
हम बेशर्म खेलते क्रिकेट, उनसे जिनके रहे गुलाम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

नक्सलवादी वो हैं, जिन्हें सताया क्रूर दबंगों ने।
जर-जोरू-जमीन को जिनकी छीना क्रूर दबंगों ने।
नक्सलवाद मिटेगा पहले, दुष्टों का हो काम तमाम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

न्यायपालिका, कार्यपालिका सब पर हावी हुई शराब।
जनता रोती, सत्ता सोती, अफसर, नेता नियत खराब।
सुविधाशुल्क के हाथों देखो, न्याय यहाँ होता नीलाम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य सभी ने, कल जनसंघ बनाया देख।
आज वही भाजपा बना तो, भूल गया बहुसंख्यक देख।
मुस्लिम और दलित के पीछे, दौड़ रहे दल आज तमाम
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

जो आतंकी हमले करता, है आतंकवाद का पोषक।
जिसके पुरखे रहे सदा से, हिन्दु, हिन्दुस्तान के शोषक।
उससे हम मित्रता निभाते, करने जाते उसे सलाम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

नेताजी का वंशवाद है, माया पैर छुआती भाया।
टूटी-फूटी काँग्रेस है, बी.जे.पी. अलसाई काया।
अब किसकी छाया में बैठे, जनता कहाँ करे विश्राम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

स्वाभिमान जागे भारत का, बामन, क्षत्री, वैश्य, दलित में।
चरण चापकर पैसे देकर, टिकट माँगना नहीं उचित में।
देशभक्त प्रत्याशी जीते, सेवा देश करे निष्काम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

गूँज उठे सम्पूर्ण विश्व में, हिन्दी- हिन्दु- हिन्दुस्तान।
विश्व गुरु बनकर भारत अब, बाँटे सकल विश्व में ज्ञान।
जब तक यह सब सिद्ध नहीं हो, तब तक है आराम हराम।
जय रघुनन्दन, जय सीयाराम।
देवकीनन्दन, जय घनश्याम।

**

हे राम उठो

हे राम उठो, बलराम उठो, जनता जनार्दन श्याम उठो।
भारत माँ का आह्वान है छोड़ो सारे आराम उठो।
दुश्मन सीमाएँ छेड़ रहा,
लक्ष्मण रेखा को तोड़ रहा।
पागल कुत्ते सा भौंक रहा,
घायल घोड़े सा दौड़ रहा।
है समय यही उपयुक्त उठो, देनी है उसे लगाम उठो,
हे राम उठो, बलराम उठो, जनता जनार्दन श्याम उठो।
बज उठे आज फिर पाँञ्चजन्य,
सज उठे इन्द्र का ऐरावत।
फिर कृष्ण सारथी बने, पार्थ
गाण्डीव उठे काँपे पर्वत।
गीता के गीत सुनेंगे फिर, रणभेरी सुनो अविराम उठो।
हे राम उठो, बलराम उठो, जनता जनार्दन श्याम उठो।
फिर रामायण को दोहरा दो,
शत्रु को रावण सा मारो।
पानी देने वाला न रहे,
हर आतंकी को संहारो।
तुम सा बलवान नहीं कोई, मत करो आज विश्राम उठो।
हे राम उठो, बलराम उठो, जनता जनार्दन श्याम उठो।
होनी है विजय धर्म ही की,
है नाश अधर्मी का होना।

रण बाँके भारत के पूतो,
है समय पवित्र नहीं खोना।
आतंकवाद को चीर चलो, हो उसके घर कोहराम उठो।
हे राम उठो, बलराम उठो, जनता जनार्दन श्याम उठो।
आतंकवाद नक्सलीवाद,
या उग्रवाद से डरो नहीं।
तुम पूर्ण अहिंसक बने रहो,
पर कायरता से मरो नहीं।
इससे पहले वह वार करे, उसकी हो नींद हराम उठो।
हे राम उठो, बलराम उठो, जनता जनार्दन श्याम उठो।

**

नेता

कायरता का पाठ पढ़ाते, हमें अहिंसा धर्म सिखाते।
तुष्टिकरण से, आरक्षण से, केवल अपना काज सधाते।
कैसे मैं इनकी जय बोलूँ,
इनकी पोल कहाँ तक खोलूँ।

काश्मीर भारत का निःसन्देह अभिन्न अंग बतलाते–
कैसी है पर कहाँ विवशता, तीन सौ सत्तर नहीं हटाते।
कैसे मैं इनकी जय बोलूँ,
इनकी पोल कहाँ तक खोलूँ।

भारत की भाषा हिन्दी को, राष्ट्र की भाषा नहीं बनाते–
जलियांवाला बाग के हत्यारों की, भाषा शीश चढ़ाते।
कैसे मैं इनकी जय बोलूँ,
इनकी पोल कहाँ तक खोलूँ।

बाढ़ नियंत्रण– राहत का धन, बाढ़ से पहले ही खा जाते–
बड़े चतुर हैं नेता– पीड़ित, को झूठा ढाँढस बँधवाते।
कैसे मैं इनकी जय बोलूँ,
इनकी पोल कहाँ तक खोलूँ।

गैंगरेप, अपहरण, लूट के, नित्य आँकड़े बढ़ते जाते–
श्वान तो मिल जाता मंत्री का, अपहृत बच्चे ना मिल पाते।
कैसे मैं इनकी जय बोलूँ,
इनकी पोल कहाँ तक खोलूँ।

वंशवाद को कल रोते थे, अपना कुनबा आज बढ़ाते–
पुत्र– पौत्री, भाई, भतीजे, सबको कुर्सी पर बैठाते।
कैसे मैं इनकी जय बोलूँ,
इनकी पोल कहाँ तक खोलूँ।

हर चुनाव से पहले यह सब, जनसेवक का धर्म निभाते–
पर चुनाव में जीत गए तो, यह अन्धे बहरे बन जाते।
कैसे मैं इनकी जय बोलूँ,
इनकी पोल कहाँ तक खोलूँ।

हिंसा का जवाब गोली है, सेना को यह नहीं सिखाते–
अपनी फौजो और पुलिस को, उग्रवादियों से पिटवाते।
कैसे मैं इनकी जय बोलूँ,
इनकी पोल कहाँ तक खोलूँ।

कितने पत्थर दिल हैं नेता, वर्ष लगेंगे इसे बताते–
भूख, खुदकशी और गरीबी, नहीं देखकर यह शर्माते।
कैसे मैं इनकी जय बोलूँ,
इनकी पोल कहाँ तक खोलूँ।

कभी किसी भूखे को भोजन, नहीं बैठकर यह करवाते–
किन्तु रसोईघर से इनके, छबड़ों भोजन फेंके जाते।
कैसे मैं इनकी जय बोलूँ,
इनकी पोल कहाँ तक खोलूँ।

सत्तर वर्ष हो गए लगभग, देश लूट-लूट कर खाते-
बहुसंख्यक को मूर्ख बनाकर, अल्पसंख्यक को गले लगाते।
कैसे मैं इनकी जय बोलूँ,
इनकी पोल कहाँ तक खोलूँ।

अल्पसंख्यक को और दलित को, वोट की खातिर खूब रिझाते-
दलित नहीं है कोई लेकिन, हर निर्धन को दलित बताते।
कैसे मैं इनकी जय बोलूँ,
इनकी पोल कहाँ तक खोलूँ।

अच्छा होता न्याय, चिकित्सा, शिक्षा सबको सुलभ कराते-
सुविधा शुल्क खत्म हो जाता, ऐसी सुविधा नीति बनाते।
कैसे मैं इनकी जय बोलूँ,
इनकी पोल कहाँ तक खोलूँ।

विद्वत्वजन सम्मानित करते, चाटुकार को दूर भगाते-
भारत को इस भरत भूमि को, गद्दारों से मुक्त कराते।
कैसे मैं इनकी जय बोलूँ,
इनकी पोल कहाँ तक खोलूँ।

✱✱

जनता जाग्रत हो गई

आज समूचे देश में है बस यही प्रलाप।
कैसे भ्रष्टाचार का मित्र मिटेगा ताप।

सक्रिय आत्माएँ हुई, दुर्योधन, धृतराष्ट्र,
पुनः अवतरित कृष्ण हों, और सँभालें राष्ट्र।

जनता जाग्रत हो गई, सर पर चढ़ा जनून,
अब होने देगी नहीं, प्रजातंत्र का खून।

देश ढोएगा कब तलक, पारिवारिक तंत्र,
कब आएगा देश में, जनता का गणतंत्र।

जागे जनता देश की, जागे हिन्दुस्तान,
धर्म, वर्ग सब भूलकर, एक रहे अभियान।

मंत्री, नेता, सांसद और विधायक नेक,
घोटालों में लिप्त हैं, इनमें मित्र अनेक।

आज देश में चल रही, घोटाला सरकार,
और व्याप्त है देश में, चहुँदिशी भ्रष्टाचार।

**

कहाँ है

सारी दुनिया जानती है, हम कहीं कमतर नहीं हैं।
और यह भी सत्य है, पहले से हम बेहतर नहीं हैं।

जंगे आज़ादी में जो भी, जोश था वह अब कहाँ है।
देशहित जो देशभक्ति होश था, वह अब कहाँ हैं।
देश दुश्मन के प्रति जो रोष था, वह अब कहाँ है।
जो भी हैं हालात अपने देश में सुखकर नहीं हैं।
और यह भी सत्य है, पहले से हम बेहतर नहीं हैं।

देश पर कुर्बान होने को खड़े सब हो गये थे।
वारने को मित्र तन, मन, धन खड़े सब हो गये थे।
प्राण भी बलिदान करने को खड़े सब हो गये थे।
देशहित की सोचने को आज हम तत्पर नहीं हैं।
और यह भी सत्य है, पहले से हम बेहतर नहीं हैं।

लूटने के वास्ते अब देश के नेता बने हैं।
और घोटालें ही करने के लिए नेता बने हैं।
श्वेत खादी में छिपे मन के कलुष नेता बने हैं।
जनप्रतिनिधि आज स्वामी बन गये अनुचर नहीं हैं।
और यह भी सत्य है, पहले से हम बेहतर नहीं हैं।

अब सियासत में विरासत फिर पुनर्जीवित हुई है।
और रजवाड़ी रियासत फिर पुनर्जीवित हुई है।
यानी राजाओं की आदत फिर पुनर्जीवित हुई है।
जुल्मतो की धूप है अब साये के तरुवर नहीं हैं।
और यह भी सत्य है, पहले से हम बेहतर नहीं हैं।

जनप्रतिनिधि स्वयंहित कानून गढ़ते जा रहे हैं।
सांसद निधि और वेतन-भत्ते बढ़ते जा रहे हैं।
इनके महलों के कंगूरे और चढ़ते जा रहे हैं।
इन्हें क्या अधिकांश जनता पर अगर घर-दर नहीं हैं।
और यह भी सत्य है, पहले से हम बेहतर नहीं हैं।

**

मैं

जिसमें जनहित और देशहित हो, मैं ऐसा काम करूँगा।
जो शहीद हो गए देश पर, उनको सदा प्रणाम करूँगा।

मुझे फौज में भरती कर लो, मुझे देश सेवा में ले लो–
आतंकी सारी गतिविधियों, का मैं पूर्ण विराम करूँगा।

मुझे भेज दो सीमाओं पर, फिर कोई घुसपैठ न होगी,
उनके साथ मददगारों को, भी उनके गुमनाम करूँगा।

मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे में, फिर कोई उत्पात न होंगे,
झगड़ें सभी साम्प्रदायिक मैं, बन्द तुरत निष्काम करूँगा।

तुमसे नहीं सँभलता है तो, शासन सत्ता मुझे सौंप दो,
घोटाला करने वालों का, मुँह काला अविराम करूँगा।

न्याय प्रक्रिया जानकार हूँ, न्यायाधीश बना दोगे तो,
लम्बित वादों का निस्तारण, बिना लिए कुछ दाम करूँगा।

भ्रष्टाचार मिटाने के हित, कठिन तपस्या, पूजा–अर्चन,
एक टाँग पर खड़ा हुआ मैं, सुबह करूँगा, शाम करूँगा।

लूट रहे जो देश धरा को, उन सबको मैं जान गया हूँ,
अवसर तो दो उन्हें तुम्हारा, सेवक सिद्ध गुलाम करूँगा।

मुझको नहीं जानते हो तुम, ईश्वर का वरदान सबल हूँ,
जो भी तुमसे नहीं हो सका, वह मैं सभी तमाम करूँगा।

✱✱

वहाँ वर्षा नहीं होती

हुई आकाशवाणी कल जगाने को धरा सोती।
जहाँ गौवंश कटता है, वहाँ वर्षा नहीं होती।

हमीं ने वायुमण्डल को विषैला कर दिया यानी।
असीमित खर्च कर डाला धरा से खींचकर पानी।
सघन वन काट डाले, कर दिये नंगे सभी पर्वत।
सकल भूमि हुई बंजर, जो सदियों से रही धानी।

जहाँ गरिमा गगन की, नष्ट होती है परीक्षण में–
वहाँ बादल नहीं होते, वहाँ वर्षा नहीं होती।

जहाँ राजा प्रजा से भेद का, व्यवहार करता है।
घुटालों का समूचा देश ही व्यापार करता है।
समान आचार की जब संहिता लागू नहीं होती–
जहाँ सम्बन्ध ही सम्बन्ध से व्यभिचार करता है।

हमीं जब संस्कृति के साथ में, खिलवाड़ करते हैं।
अमर्यादित जहाँ नारी, वहाँ वर्षा नहीं होती।

जहाँ हर बात में छल हो, प्रदूषण हर तरफ फैला।
जहाँ गंगा में डाला जा रहा हो, गन्दगी–मैला।
जहाँ फैक्ट्री का कचरा मिल रहा हो मित्र नदियों में।
सभाओं में जहाँ पर, नृत्य करती नग्नता लैला।

जहाँ पर लाज लुटती है, जहाँ अपहरण होते हैं।
प्रदूषित हो जहाँ गंगा, वहाँ वर्षा नहीं होती।

जहाँ पर न्याय को दर-दर भटकता है दुखी निर्बल।
दबंगों को जहाँ देते समर्थन, राजनीतिक दल।
जहाँ कानून में कानून का पालन नहीं होता।
जहाँ कीचड़ हो घोटालों की, हो दल-बदल की दलदल।

जहाँ पर न्याय को अन्याय का अजगर निगलता है।
वहाँ गर न्याय बिकता है वहाँ वर्षा नहीं होती।

यहाँ जनता भी शायद धर्म पर स्थिर नहीं अपने।
यहाँ पर टूटते हैं नौजवानों के सभी सपने।
यहाँ तुष्टिकरण है एक को, दूजे को आरक्षण।
पुजारी बन के बैठा चोर भी माला लगा जपने।

जहाँ आतंकियों की सजा के बदले सुरक्षा हो।
पुजारी हो नराधम तो, वहाँ वर्षा नहीं होती।

**

व्यवहारिता

कौन मूल्यांकन करेगा आपका।
किन्नरों से जब पड़ा हो साबका।

आदमी को आदमी खाने लगा,
आज सेवक हुक्म फरमाने लगा,
पाँव सर से भी बड़ा जब हो गया–
अब मिलेगा कहाँ जूता नाप का।

विघटित ईकाई परिवारिक हुईं,
नष्ट मर्यादाएँ सामाजिक हुईं,
छल रहा है इन्द्र अनुसूइया हितेश–
फल मिला है हमें किस अभिशाप का।

लोकतंत्री हर व्यवस्था लुप्त है,
देश की जनता समूची सुप्त है,
नित्य घोटाले नए हैं सामने–
देश कुछ के हो गया है बाप का।

छल-कपट के साथ चाटूकारिता,
राजनीति की यही व्यवहारिता,
मर गए हैं गिद्ध, लेकिन सिद्ध कुछ–
नोचते हैं मांस मानव खाप का।

राक्षस इतने बढ़े हैं देश में,
अब नहीं अन्तर बचा परिवेश में,
सन्त भी संलिप्त हैं व्यापार में–
पर नहीं शायद भरा घट पाप का।

**

मैं स्वयंभू

झूठ पर मेरा नहीं विश्वास कोई,
क्योंकि मेरा सच कहीं गिरवीं नहीं है।

तुम कहो जो भी उसे चुपचाप सुनकर,
वार्ताओं को अधूरा छोड़ चल दूँ।
व्यंग्य जो तुमने किये वह भूल जाऊँ,
और अपनी चेतनाओं को कुचल दूँ।

मैं अहिंसक हूँ मगर कायर नहीं हूँ,
क्योंकि मेरी आत्मा गिरवीं नहीं है।

मैं तुम्हें सम्मान दे सकता हूँ, लेकिन–
कठिन है मेरे लिए अपमान सहना।
मैं करूँगा घात पर प्रतिघात निश्चित,
क्षमा कर दूँ, इस भुलावे में न रहना।

मैं नहीं झुकता, झुकाना जानता हूँ,
क्योंकि मेरा मनोबल गिरवीं नहीं है।

इस समूचे विश्व में तुमको बता दूँ,
मातृ भूमि और माँ सर्वोपरि है।
उसे मेरी शत्रुता सहनी पड़ेगी,
आँख जिसने भी इधर टेढ़ी करी है।

मुझे सत्तासीन किन्नर मत समझना,
पुरु हूँ, पौरुष मेरा गिरवीं नहीं है।

शत्रुता या मित्रता में भेद करना,
मैं स्वयंभू भली भाँति जानता हूँ।
देश में जयचन्द जाफर शेष है पर–
मैं उन्हें इस भीड़ में पहचानता हूँ।

हाथ में केवल कलम है, किन्तु प्रियवर,
शस्त्र भी मेरा कहीं गिरवीं नहीं है।

✸✸

बदलना चाहिए

तीर तरकश से निकलना चाहिए।
अब हमारा स्वर बदलना चाहिए।

खून है रग में अगर, पानी नहीं,
छेड़खानी पर उबलना चाहिए।

वार हम पर कर रहा है जो हितेश,
उसे भी अब सबक मिलना चाहिए।

लोग खामोशी को कायरता कहें,
इससे पहले बर्फ गलना चाहिए।

ज्वार गंगा में उठाने के लिए,
अब हिमालय को पिघलना चाहिए।

शठे शाठयम् का यही सिद्धान्त है,
जो करे छल, उसे छलना चाहिए।

व्यर्थ है मौखिक-लिखित करना विरोध,
शास्त्र को शस्त्रों में ढलना चाहिए।

✸✸

यह कैसा गणतंत्र

यह कैसा गणतंत्र कि जिसमें, आतंकी हमलों का डर है।
अपने ही घर के लोगों से, भयाक्रांत अपना ही घर है।

घोटालों को झेल रहे हैं, भारत की जय बोल रहे हैं।
लूट रहे हैं देश धरा को, सोना चाँदी तोल रहे हैं।
व्यभिचारी, हत्यारें खुलकर, अब दिल्ली में डोल रहे हैं।
रोक न पाया शासन, वह भी भ्रष्टाचारों पर निर्भर है।

सन् पचास से जहाँ खड़ी थी, अभी गरीबी वहीं खड़ी है।
भ्रष्ट व्यक्तियों की धन-सम्पद, साठ गुने से अधिक बढ़ी है।
बेकारी, महँगाई बनकर– काल हमारे शीश चढ़ी है।
नमक छिड़कता कृषि मंत्री का, उस पर अ-मर्यादित स्वर है।

खेल-खिलाड़ी की क्रिकेट में, रोज हो रही है नीलामी।
लौट रही है फिर भारत में, वहीं पुरातन प्रथा गुलामी।
पोलियो-पॉलीथीन अभी तक, चाल चल रहे हैं द्रुतगामी।
जाने जाकर कहाँ रुकेगा, यह गिरता शासन-स्तर है।

अब भी बँधुआ मजदूरी है, अब भी बालश्रमिक हैं बच्चे।
बरसातों में बह जाते हैं, अब भी निर्धन के घर कच्चे।
झूठे आश्वासन शासन के, जनता को लगते हैं सच्चे।
अनगिन समस्याएँ हैं, जिनका बोझा भारत के सर पर है।

दोनों देश पड़ोसी अपनी, भृकुटि कुटिल किये बैठे हैं।
और चल रही सीमा पर, आतंकवाद की घुसपैठें हैं।

अल्पसंख्यक शासन की शह पर, बोल रहे जैसे जेठे हैं।
राजमहल में मंत्री जी का, गूँज रहा खर्राटा तर है।

शुभकामना दे रहे लेकिन, एक चोर है मन के अन्दर।
आँख मूँदकर चुप हैं बहरे, जैसे गांधी जी के बन्दर।
घोटालों में लिप्त हो रहे, खा-पीकर सब मस्त कलन्दर।
सबको शुभ गणतंत्र दिवस हो, यह कहना औपचारिक भर है।

**

आजादी

शुभ पन्द्रह अगस्त हो हमको, मिली थी जिस दिन आजादी।
घूम रही तब से भारत में भेष बदलकर आजादी।

पदोन्नति हो या नियुक्ति हो या हो प्रथम प्रवेश कहीं–
न्यायालय–कार्यालय में है, सुविधाशुल्क की आजादी।

मुख्यमंत्री ने, मंत्री जी ने बढ़ा लिए अपने वेतन–
देश के लूट–खसोट की इनको मिली है पूरी आजादी।

अब तक बन्धुआ है गरीब की, पत्नी क्रूर दबंगों की–
और दबंगों को है हत्या, लूटमार की आजादी।

जीवन जैसे पराधीन है, गुण्डों और लफग्गों का–
हाइवे पर है गैंगरेप की, दुष्कर्मो की आजादी।

मैकाले के पुत्रों की है, कैद में भारत की हिन्दी–
अँग्रेजी को निज प्रयोग की सभी जगह है आजादी।

सरकारी गोदामों में सड़ता अनाज– अन्धायुग है–
किन्तु आत्महत्या की है, हर भूखे को आजादी।

बहुसंख्यक को नहीं स्वतन्त्रता भाषण देने भर की भी–
अल्पसंख्यक को किन्तु गालियाँ– देने की भी आजादी।

हाथ बाँध रखे फौजों के, कायर नेताओं ने– पर–
काश्मीर में गद्दारों को, है हिंसा की आजादी।

पकड़ा जो तेजाब डालकर, भाग रहा था कन्या पर–
किन्तु मिल गई तुरन्त जमानत, न्यायालय की आजादी।

विद्वानों की पूछ नहीं है, अवहेलित पांडित्य हुआ–
चाटुकार को पद्मश्री के, मिल जाने की आजादी।

रफ भारत को कहता जो, टफ बतलाता है बैटरी को–
भारतरत्न मिला उसको, दुर्भाग्य देश की आजादी।

आरक्षण ने, तुष्टिकरण ने, देश का सत्यानाश किया–
जाने कब इन दो नागों से, हमें मिलेगी आजादी।

✱✱

एक स्वर हो, एक हो हुंकार

अब उठाना ही पड़ेगा शस्त्र, शास्त्र से अब नहीं चलता काम।
शत्रु के संहार के हित मित्र, तुम्हें बनना ही पड़ेगा राम।

भगतसिंह बनकर जगाओ देश, बनो बिस्मिल, राजगुरु, आजाद।
ब्राह्मण हो तो समाधि त्याग, बन सको तो बनो परशुराम।

देश में हो हिन्दी का अपमान, और अँग्रेजी का हो गुणगान।
उठो हिन्दी हित तुरन्त हितेश आंग्लभाषा को करो गुमनाम।

रो रहा है जलियांवाला बाग, आत्माओं की सुनो चित्कार।
क्षत्रिय हो तो बनो पृथ्वीराज, क्षमा करना बन्द हो अविराम।

जाग उट्ठे धरा का कण-कण, नवयुवक हों राणासिंह प्रताप।
त्याग भी दो अहिंसा को मित्र, राक्षसों के हित बनो घनश्याम।

लक्ष्मीबाई बने माता-बहन, और हर इक पुत्र बने सुभाष।
वणिक हो तो बनो भामाशाह, देशहित में त्याग दो धन धाम।

दलित कोई भी नहीं है आज, राजनेताओं की है यह चाल।
एक स्वर हो, एक हो हुंकार, मत रहो अब अहिंसक निष्काम।

युगों से भारत है हिन्दू राष्ट्र, जगे अब हिन्दुत्व वाला भाव।
आन्तरिक हो याकि शत्रु बाह्य, मिटा दो उसका धरा से नाम।

विश्व में फहराए भगवा आज, विश्व भाषा बने हिन्दी मित्र।
जब तलक यह सब नहीं हो प्राप्त, तब तलक करना नहीं आराम।

**

धीरे-धीरे

धीरे-धीरे सूख रही है, भारत में गंगा की धारा।
आरक्षण की, तुष्टिकरण की, भेंट चढ़ गया भारत सारा।

अम्बेडकर की पूजा होती, पवनपुत्र को भुला दिया है।
स्वयं हिन्दुओं ने हिन्दुत्वी भाव हृदय का सुला दिया है।
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य सभी ने, माया को नेता स्वीकारा।

डरे-डरे हैं, मरे-मरे हैं, देशभक्त नेता बेचारे।
जे.एन.यू. में देशद्रोह के, लगा कन्हैया रहा है नारे।
दलित, दलित का नारा देकर, दलितसुता निज भाग्य संवारा।

देश विकास विरोधी नेता, संसद में गतिरोध कर रहे।
करें दिखावा देशभक्त हैं, देशद्रोह पर शोध करे रहे।
नेताजी के वंशवाद से, प्रजातंत्र हारा बेचारा।

अल्पसंख्यक सुविधाएँ पाकर, बोल अर्नगल बोल रहे हैं।
हिन्दु, हिन्दुस्तान में अपने, बेगाने से डोल रहे हैं।
जाने कब किसके हाथों से, सँवरे भारत भाग्य हमारा।

अर्न्तकलह बाहरी शत्रु आतंकी या माओवादी।
'सबका' के सारे नेताओं, ने इन सबको खूब हवा दी।
जिस पर आस्था थी, उसने भी अब हमसे कर लिया किनारा।

जाने कब तक हम ढोएँगे, गलती नेहरू की, गाँधी की।
कब तक और प्रतिक्षा होगी, उस उठने वाली आँधी की।
काश्मीर से तीन सौ सत्तर, का जो दूर करे अँधियारा।

✱✱

लोकतंत्र के कुरुक्षेत्र में

लोकतंत्र के कुरुक्षेत्र में, सबकी सेना सजी खड़ी है।
व्यंग्य बाण चल रहे निरंतर, वक्तव्यों की लगी झड़ी है।
और पूर्व की तरह पितामह, पुनः पांडवों के विरुद्ध हैं–
अर्जुन के श्रीकृष्ण साथ हैं, और चुनौती बहुत कड़ी है।

चाटुकार, अवसरवादी के, आज देश में भाव बढ़े हैं।
भितरघात के लिये विभीषण, जयचन्द भी तैयार खड़े हैं।
पुत्र मोह में देश ग्रस्त है, कोई पत्नीव्रती हुआ है–
कोरे आश्वासन भाषण के, गुंजित नारे बड़े-बड़े हैं।

विजयलक्ष्मी के वरने को, योद्धाओं की साख अड़ी है।
अर्जुन के श्रीकृष्ण साथ हैं, और चुनौती बहुत कड़ी है।

कर्ण भाईयों के विरुद्ध है, शत्रु भी मुँह खोल रहे हैं।
अर्न्तध्यान रहे जो कल तक, वह बढ़-चढ़ कर बोल रहे हैं।
राजनीति में गिरगिट से भी, जल्दी रंग बदलने वाले–
पक्षी और विपक्षी सारे, अपने पर को तोल रहे हैं।

राजनीति रच रही स्वयंवर, माला कर में स्वर्ण जड़ी है।
अर्जुन के श्रीकृष्ण साथ हैं, और चुनौती बहुत कड़ी है।

कुछ ऐसे भी बड़बोले हैं, जिनको कोई शर्म नहीं है।
निष्ठा रोज बदलने वाले, भी हैं जिनका धर्म नहीं है।
एकाकी अर्जुन को सारे, कौरव ने मिलकर घेरा है–
स्वयंनग्न नंगा करने को, जो कहते अपकर्म नहीं है।

जिससे कल तक गठबन्धन था, आज वही दे गया तड़ी है।
अर्जुन के श्रीकृष्ण साथ हैं, और चुनौती बहुत कड़ी है।

गद्दारों के साथ खड़े हैं, कुछ दबंग कुछ सत्ताधारी।
वह भी हैं, जिनको घोटाला, करने की भी है बीमारी।
हर सेना में शामिल है कुछ, उत्पादी थोड़े अपराधी–
संकोची से दीख रहे हैं, सत्यनिष्ठ औ' धर्माचारी।

लाल बहादुर शास्त्री जैसी, आत्मा कैसे सुप्त पड़ी है।
अर्जुन के श्रीकृष्ण साथ हैं, और चुनौती बहुत कड़ी है।

जेलों के भीतर से भी कुछ, सेनापति दहाड़ रहे हैं।
कुछ के डेरे तने हुए हैं, खेमें कई उखाड़ रहे हैं।
शब्दबाण के माहिर सारे, लांघ रहे हैं मर्यादाएँ–
तथाकथित यह देशभक्त सब, मिल कर देश उजाड़ रहे हैं।

कहीं भगदड़ी, कहीं हड़बड़ी और कहीं गड़बड़ी बड़ी है।
अर्जुन के श्रीकृष्ण साथ हैं, और चुनौती बहुत कड़ी है।

**

हो सिंहनाद

आतंकी हमले से पहले अर्जुन अपना गाण्डीव उठा,
ला शयनकक्ष से अंगद को बाहर, सोया सुग्रीव उठा।

माओवादी, नक्सलवादी यह उग्रवाद के सहयोगी,
कालान्तर वीर हुए सारे, बच गये सिर्फ सत्ता भोगी।
अनगिनती अजगर निगल रहे, सभ्यता संस्कृति भारत की,
अपने सारे ही कर्णधार मधुमेह-ऊर्जा क्षय रोगी।

अब उठे सुदर्शन चक्र, कृष्ण का भीमसैन की गदा उठे,
आह्वान कर दुष्यन्त पुत्र जो गिने सिंह के दन्त उठा।

चेतक सवार राणा प्रताप, जागे अब झाँसी की रानी,
राणा सांगा, गोविन्द, शिवा, शत्रु जिनसे माँगे पानी।
गद्दारों देशद्रोहियों को अब चौराहे पर फाँसी हो,
कुर्सी छोड़े कापुरुष, युद्ध से जिनकी मरती है नानी।

जो केवल गाल बजाते हैं, सो जाए काल कोठरी में,
हो सिंहनाद प्रत्येक वाद के मर्दन को तलवार उठा।

आतंवाद उन्मूलन को जागे इन्दिरा गाँधी, पटेल,
आतंकवाद सहयोगी के डाली जाये मित्रो नकेल।
अब एक सूत्री कार्य रहे, मिट जाए शत्रु भारत भू के,
जब तक जीवित आतंकवाद, हो बंद सभी त्यौहार, खेल।

जो भी भारत के शत्रु हैं उनकी पहचान सुनिश्चित हो,
उठ पृथ्वी राज चौहान, शब्द भेदी कर शर संधान उठा।

ओ कलमकार, ओ महाकवि भूलों शृंगारिक प्रणय गीत,
जय घोष करो उद्घोष करो, आतंकी छल बल हो व्यतीत।
आह्वान हो युग पुरुषों का, पौरुष का वीर धनुर्धर का,
आतंकवाद या उग्रवाद के सपने हो जाएँ अतीत।

जो माने नहीं अहिंसा से उसको हिंसा का रूप दिखा,
यह माँग समय की है हितेश, अब कलम छोड़ तलवार उठा।

**

रामजी

आज फिर सिन्धु को बाँधिये रामजी।
फिर धरा से गगन नापिये रामजी।

आचरण पर पड़ा आवरण आजकल।
हो रहे हैं हरण, अपहरण आजकल।
सभ्यता का हुआ है, क्षरण आजकल–
आज फिर बाण संधानिये रामजी।

अब विभीषण हैं, लक्ष्मण कहीं भी नहीं।
संस्कृति का है, लक्षण कहीं भी नहीं।
मानवी का है रक्षण, कहीं भी नहीं–
आज फिर दुष्ट, संहारिये रामजी।

अविवाहित बने आज माता-पिता।
पुत्र माता-पिता को बताये धता।
किसने फेंका शिशु, कुछ नहीं है पता–
आज मरजाद फिर साधिये रामजी।

साम्प्रदायिक हुए आज सम्बन्ध सब।
अपने ईश्वर से जैसे अलग उसका रब।
मान्यताये बदलने लगी हैं, गजब–
आज फिर विश्व सम्हालिये रामजी।

विश्व में आज आतंकिया राज है।

नक्सली, उग्र ज्यों कोढ़ में खाज है।
शीश घोटालियों के सजा ताज है–
आज फिर धर्म संस्थापिये रामजी।

राष्ट्र में राष्ट्रभाषा के हित के लिये।
हों भरतभूमि पर भारती के दिये।
हिन्द में हिन्दी स्थापना के लिए–
आज व्यवधान सब लाँघिये रामजी।

✸✸

ऊब रहा है देश

देश विरोधी आज लहर में डूब रहा है देश।
अपनों की ही गतिविधियों से ऊब रहा है देश।

दायें कर को आज, स्वयं ही बायाँ कर छलता है।
जेएनयू में राष्ट्रविरोधी, वामपंथ पलता है।
सांसद याकि विधायक निधि का कुछ उपयोग न होता—
प्रश्न करों तो उत्तर मिलता, ऐसे ही चलता है।

जाने कहाँ गये जिनका, महबूब रहा है देश।
देश विरोधी आज लहर, में डूब रहा है देश।

व्यर्थ गया बलिदान शहीदों का, आजादी के हित।
नये नये घोटाले यहाँ, उजागर होते हैं नित।
मरता है अखलाक चीख उठती है सारी दुनिया—
हत्या पर नारंग डॉक्टर की, बोले ना किंचित।

बना रहा जाने कैसे, मन्सूब रहा है देश।
देश विरोधी आज लहर, में डूब रहा है देश।

देश विरोधी बोल रहा जो, वह बन जाता हीरो।
राष्ट्रवादियों की छवि को करने लगता है ज़ीरो।
गैंग रेप हत्यायें अपहरण रोज यहाँ होते है—
और प्रशासन जैसे वंशी बजा रहा हो नीरो।

कहते है कुछ लोग कभी तो, खूब रहा है देश।
देश विरोधी आज लहर में डूब रहा है देश।

राजनीति को वेश्या कहना, बिलकुल उचित नहीं है।
पहले थी, अब किन्नर है, क्या तुमको विदित नहीं है।
जनता के सहने की शक्ति, सागर से गहरी है–
इसीलिये तो यहाँ क्रांति, होती फलित नहीं है।

उससे क्यों गद्दारी सबका, जो मतलूब रहा है देश।
देश विरोधी आज लहर में डूब रहा है देश।

**

कैक्टस सींच रहा हूँ

मेरे बागीचे में यों तो, अनगिन पौधें हैं गुलाब के।
पर सामाजिक विकृतियों से, त्रस्त कैक्टस सींच रहा हूँ।

सोच रहा हूँ उनकी राहों में, जाकर कैक्टस बो दूँगा,
जो आती-जाती कन्याएँ राहों में छेड़ा करते हैं।
बहुत हौंसले बढ़े हुए हैं, जिनके नेताओं की शह पर,
यदि विरोध होता है तो फिर, मार-पीट-झगड़ा करते हैं।

पुलिस-प्रशासन कभी-कभी तो मूक देखता रह जाता है,
किंकर्त्तव्यविमूढ़ खड़ा मैं, केवल मुट्ठी भींच रहा हूँ।

सामूहिक बलात्कार के, हर दोषी के घर के आगे,
शूल बिछा दूँगा राहो में, छलनी करने को पग उनके।
रक्त सने पाँवों से उनका, छिपना सरल सहज ना होगा,
पकड़े जाने पर रोएँगे, मुँह पर थूकेगा जग उनके।

पढ़कर, सुनकर और देखकर, ऐसी सारी घटनाओं को,
ऐसे कलुषित वातायन में, कैसे साँसें खींच रहा हूँ।

बलात्कार, दुष्कर्म, घोटाला करने वाले नेताओं के,
बिस्तर पर कैक्टस के काँटें, बिछा अगर पाया हितेश मैं।
ऐसे दागी नेताओं के, चेहरे बेनकाब तो होंगे,
उन पर कालिख मलने को यदि, भले रहूँगा नहीं शेष मैं।

दुष्चरित्र सब भ्रष्टाचारी, संसद में जाने ना पाएँ,
अगर सही हूँ, साथ चलो तुम, मैं गन्दगी उलीच रहा हूँ।

तुष्टिकरण और आरक्षण की जब कब्रें बन जाएँगी।
उस दिन कैक्टस के फूलों को, मैं जाकर उन पर रख दूँगा।
सद्-आचारी, देशभक्त, स-चरित्र, जो नेता होंगे,
अपने आँगन के गुलाब मैं उनके हाथों में सौंपूँगा।

हिन्दी भाषा- रामराज की सुखद कल्पना में जीवित मैं,
अपनी हड्डी तक देने को, तत्पर सदा दधीच रहा हूँ।

**

मनुज क्यों असमर्थ है

समय सदुपयोग हर पल का करो, मृत्यु की करना प्रतीक्षा व्यर्थ है।
सोच मृत्यु का निरर्थक क्यों करें, जिन्दगी में जिन्दगी का अर्थ है।

मृत्यु की जो प्रतीक्षा में रो रहे, वह समय को व्यर्थ अपने खो रहे–
जो समय के साथ में गतिशील हैं, वही कल के वास्ते कुछ बो रहे।
अगर बोओगे नहीं तुम स्वप्न तो, जिन्दगी में शून्यता आ जाएगी–
देखिये सबकुछ उन्होंने खो दिया, आज भी जो दिन चढ़े तक सो रहे।

सोचना ही सोचना फिर सोचना, बना देता मनुज को असमर्थ है।
सोच मृत्यु का निरर्थक क्यों करें, जिन्दगी में जिन्दगी का अर्थ है।

आज होगा जब तभी देखेगे कल, अभी से कल के लिए चिन्तित न हों।
जब तलक जीवन है गति देते रहें, रास्ते में बैठकर निश्चित न हो।
स्वप्न बोओगे तो जीवन का सफर, हर कदम आसान होता जाएगा–
राह की बाधाएँ सब हट जाएँगी, शर्त इतनी है कि तुम विचलित न हो।

हर परिस्थिति में रहो संग्रामरत, पुराणों की बात यह अभ्यर्थ है।
सोच मृत्यु का निरर्थक क्यों करें, जिन्दगी में जिन्दगी का अर्थ है।

त्यागना सीखो प्रभु श्रीराम से, रहो शिव संकल्प तुम निष्काम से।
कर्म करना ही तुम्हारा धर्म है, क्यों सशंकित हो रहे परिणाम से।
चाहते हो जो वही होगा हितेश, चाह में संकल्प दृढ़ होगा अगर–
हर घड़ी हो सार्थक, हर पल सफल, लक्ष्य पाओगे सदा सुखधाम से।

भीष्म की भाँति प्रतीज्ञा तो करो, सुनिश्चित वर प्राप्ति तदर्थ है।
सोच मृत्यु का निरर्थक क्यों करें, जिन्दगी में जिन्दगी का अर्थ है।

हवाओं के साथ चलना सीख लो, धार के विपरीत तैरो तो जरा।
भँवर में फँसकर भी सक्रियता रहे, जो हुआ निष्क्रिय सदा डूबा मरा।
युद्ध में पायी उसी ने जयश्री, जख्म सहकर भी जो लड़ता ही रहा–
उसे घर पर भी नहीं स्वागत मिला, भागकर घर आ गया रण से डरा।

समय है सामर्थ्य को पहचान लो, जिसने पहचाना वही समर्थ है।
सोच मृत्यु का निरर्थक क्यों करें, जिन्दगी में जिन्दगी का अर्थ है।

✸✸

नया वर्ष हम सबको शुभ हो

नये वर्ष के प्रथम दिवस की प्रथम किरण का अभिनन्दन है।
शुभकामना तुम्हें है, स्नेह अनुज को, अग्रज को वन्दन है।

लेकिन चिन्ता बनी हुई है आतंकी बम विस्फोटों की।
जो कुछ भी खोया है, मन में चुभन कसकती है चोटों की।
आतंकी, माओवादी, नक्सली-उग्र सारे सक्रिय हैं।
सत्ता के भूखे मानवतावादी जाने क्यों निष्क्रिय हैं।

कश्मीर में आग लगी है, श्रीनगर, आसाम जल रहा।
नक्सलवादी पनप रहे हैं माओवादी द्वेष पल रहा।
अपने ही स्वदेश में, देशद्रोह के अड्डे पनप रहे हैं।
हममें से ही कुछ इन सारी, आपदाओं के जनक रहे हैं।

रेलें, संसद, हाट, बगीचे, सड़क, सभाएँ नहीं सुरक्षित।
यह कैसा आश्चर्य, देश में अपने ही हम हुए अरक्षित।
घर के बाहर अगर चलो तो, ईश्वर करें तुम्हारी रक्षा।
रहो सतर्क और रहने की बच्चों को भी देना शिक्षा।

नये वर्ष में खुशियाँ गायें, मनचाही इच्छा वर आयें।
कृष्ण प्रकट हों, राम अवतरित होकर नष्ट करें विपदायें।
तुमको शुभ हो, मुझको शुभ हो, नया वर्ष हम सबको शुभ हो।
ईश्वर रक्षा करे देश की, जनजीवन कुछ नहीं अशुभ हो।

मर्यादाएँ सम्मानित हो, स्वप्न पूर्ण हो रामराज का।
हो भयमुक्त समाज खात्मा हो जाये आतंकराज का।

✱✱

वन्दे मातरम्

किसने लिखा है भाल पर भारत के वन्दे मातरम्,
यह कौन उषाकाल में गाता है वन्दे मातरम्।

हम हैं अभी पहने हुए अँग्रेजियत की बेड़ियाँ,
बस व्यंग्य सा लगता है हमको मित्र वन्दे मातरम्।

हो दासता से मुक्त अपनी भारती माँ भारती,
होगा तभी तो सत्य शाश्वत घोष वन्दे मातरम्।

इस देश में अब देशहित की बात होती ही नहीं,
बस चल रहा भारत भरोसे राम वन्दे मातरम्।

है धार्मिक उन्माद की ऐसी पराकाष्ठा यहाँ,
कुछ लोग कहने को नहीं तैयार वन्दे मातरम्।

जो देश हम पर कर रहा आतंकियाँ हमले हितेश–
हम साथ उसके खेलते क्रिकेट वन्दे मातरम्।

न्यायालयों, कार्यालयों में हैं सहस्रों रिक्तियाँ,
भरता नहीं कोई उन्हें निस्वार्थ वन्दे मातरम्।

आत्मा हमारी मर गई, परमात्मा भी खो गया,
हावी है सुविधा शुल्क सिद्धि स्वार्थ वन्दे मातरम्।

हिन्दी है हिन्दुस्तान में परित्यक्त पत्नी की तरह,
अँग्रेजियत है प्रेमिका सत्ता की वन्दे मातरम्।

**

पन्द्रह अगस्त

इस पन्द्रह अगस्त को अक्सर यादें कई बात आती हैं।
क्या कीमत देकर पाई है, आजादी यह बतलाती है।

यह जिन्ना नेहरू की जिद थी, गाँधी का था आत्मसमर्पण।
अँग्रेजों की कुटिल चाल का, था हितेश षडयंत्र विलक्षण।

जिस आजादी को पाने पर, लाल किले का शीश तना था।
उस दिन ही कल तक का अपना, शत्रु पाकिस्तान बना था।

अँग्रेजों ने बँटवारे में, विष का पौधा रोप दिया था।
चलते-चलते मायावी ने, छुरा पीठ में घोप दिया था।

अनगिन जन-जीवन बलि देकर, जिस दिन पाई थी आजादी।
उस दिन ही पैदा पड़ोस में, हुआ एक शत्रु अतिवादी।

आजादी तो मिली शत्रुता हम उस दिन से झेल रहे हैं।
यह कैसी महानता शत्रु के संग क्रिकेट खेल रहे हैं।

अँग्रेजों ने थोपा हम पर, कॉमनवेल्थ खेल आयोजन।
क्रिकेट हमें सिखाई, इसमें भी था उसका छुपा प्रयोजन।

भारत भूले नहीं कभी भी, अँग्रेजों का वह गुलाम था।
रानी विक्टोरिया के आगे, हर राजा करता सलाम था।

भारत की भाषा को उसने, चोर द्वार से दूर कर दिया।
अँग्रेजी ही रोटी देगी, जन-जन में मशहूर कर दिया।

रोती आत्माएँ शहीद की, हावी है अँग्रेजी भाषा।
सत्तर सालों में भी हिन्दी, बन ना सकी राष्ट्र की भाषा।

हँसते-रोते बना रहे हैं, हम स्वतंत्रता दिवस सुहाना।
लेकिन क्या स्वराज होता है, अब तक देखा और न जाना।

कुर्सी के गुलाम नेतागण, आजादी को क्या समझेंगे।
जब तक जनता नहीं जगेगी, तब तक हम परतंत्र रहेंगे।

हम नेताओं के गुलाम हैं, अँग्रेजी के हम गुलाम हैं।
कॉमनवेल्थ खेल आयोजक, क्रिकेट के भी हम गुलाम हैं।

बोलों हम कितने स्वतंत्र हैं, लाल किले से कुछ तो बोलो।
मेरा प्रश्न स्वयं से पूछो, अन्तर्रात्मा जरा टटोलो।

**

हम तुमसे ज्यादा शरीफ हैं

आतंक या नक्सलवादी, दुष्कर्मी या लव जेहादी।
हत्यारे, अपहर्ता सारे, छेड़-छाड़ करते उत्पादी।
सुन लें, गुन लें, अपने सारे ऐसे कर्मो को लगाम दें–
बाहुबली सारे नेतागण या धन-दौलत के उन्मादी।

निर्बल जिसको समझ रहे हो, उस जनता ने करवट ली है।
भूल रहे हो हर दानव का, अन्त हमेशा मरघट ही है।
पैर मोड़कर जो बैठा था, खड़ा हो गया है अब तनकर–
उन सबको पहचान रहा है, जिस-जिसने भी खटपट की है।

देख रही है जनता किसने, कल की है घुसपैठ देश में।
कितने पापी छुपे हुए हैं, साधु और महन्त भेष में।
कौन धमाकों में शामिल है, किसने बम-विस्फोट किये हैं–
छुपा हुआ है किसका चेहरा, दाढ़ी, मूछें और केश में।

सुने प्रान्त, केंद्र की सत्ता, ज्यादा नहीं चलेगा नाटक।
करने होंगे बन्द सदा को, तुष्टिकरण के सारे फाटक।
उन्हें बचाना छोड़े शासन, जो आतंकी घुसपैठें हैं–
छेड़छाड़ करने वालों की, बन्द करो नयनों की टकटक।

आतंकी, उग्री, जेहादी, अपहर्ता, दुष्कर्मी सारे।
शासन के ही पक्षपात से, खुले घूमते हैं हत्यारे।

छेड़छाड़ यदि नहीं रूकी या नहीं थमे दुष्कर्म घिनौने–
अब चुपचाप नहीं बैठेंगे, जिन्हें समझते हो बेचारे।

सत्य समझ लो, कसम राम की, रावण जैसा संहारेंगे।
तुम चौराहे पर छेड़ोंगे, हम घर में घुसकर मारेंगे।
अगर शराफत अपनाओगे, हम तुमसे ज्यादा शरीफ हैं–
काँटें नहीं बोये तुमने तो, हम भी फूल तुम्हें वारेंगे।

✸✸

प्रजातंत्र पर वार

रामदेव पर हो गई, हमलावर सरकार।
एक तंत्र ने कर दिया, प्रजातंत्र पर वार।

जलियाँवाला बाग की, हो गई ताजा याद।
जब डायर ने किये थे, कितने घर बर्बाद।

अहंकार खा जाएगा, काँग्रेस को मित्र।
दुःशासन का देश में, प्रकट हो गया चित्र।

स्त्री बच्चों पर किया, जिसने अत्याचार।
सत्ता से पदच्युत करो, अब ऐसी सरकार।

पुनः क्रांति हो देश में, उट्ठे जन सैलाब।
तभी सुरक्षित रहेगी, प्रजातंत्र की आब।

कापुरुषों की भाँति जो, करे रात में वार।
उसका मुँह काला करे, जनता का दरबार।

जैसे रावण मिट गया और मिट गया कंस।
ऐसे ही हो जाएगा, अत्याचारी ध्वंस।

उल्टी गिनती हो गई, सत्ता की आरम्भ।
आने वाले समय में, मिट जाएगा दम्भ।

अधिक समय सहती नहीं, जनता अत्याचार।
स्वतंत्रता संग्राम की, याद करो हुँकार।

✱✱

प्रलय की दस्तक

यह वर्षा ही नहीं, चेतावनी शायद समय की है।
समूचे विश्व में जो हाल है, दस्तक प्रलय की है।

किया है जो भी ताँण्डव प्रकृती ने कर्म का फल है।
कहीं संसार में तूफान है, बरसा कहीं जल है।
किये तुमने परीक्षण, भेद डाली गगन की गरिमा–
कभी तुम चाँद पर पहुँचे, कभी अभियान मंगल है।

धरा को दे न पाये, शान उसकी, अल्पना उसकी।
परिस्थिति बन गई, जल में धरा के अब विलय की है।

कहीं पर बर्फबारी हैं, कहीं पर बाढ़ आई है।
कड़कती बिजलियों में, मेघ का फटना दुहाई है।
उठाई बाढ़ घोटालों की, तुमने देश को लूटा–
नियन्ता को नियति के, बात यह बिलकुल न भाई है।

न डूबे चुल्लू भर पानी में, तुम पकड़े गये फिर भी।
घड़ी अब आ गई, सब पाप कर्मों के उदय की है।

हमेशा अपहरण, व्यभिचार को तुमने बढ़ाया है।
सदा अश्लीलता को नग्नता को सर चढ़ाया है।
तुम्हीं कारण हो, नारी हो गई निर्लज्ज, उच्छृंखल–
युवक-युवती को अविवाहित, संग रहना सिखाया है।

पराजित हो स्वयं तुम, लोभ से, मद, मोह से अपने।
अब इसके बाद भी, क्यों कामना तुमको विजय की है।

मैं पहले कह चुका हूँ, फिर भी दोहराता हूँ सुन लेना।
है पापाचार यदि सम्बन्ध-समलैंगिक हैं गुन लेना।
अगर सत्कर्म होंगे, तब ही बच पायेगी यह धरती–
अतः दुष्कर्म या सत्कर्म में से, एक चुन लेना।

बचा सकते हो अब भी तुम, धरा को नष्ट होने से।
अगर सात्विक बनोगे, बात यह सच्ची हृदय की है।

रूके गौवंश की हत्या, हों मदिरालय प्रतिबन्धित।
हटे धाराएँ आरक्षण व तुष्टिकरण सम्बन्धित।
न लाँघें लक्ष्मण रेखा, हमारे देश की नारी–
कभी भी न्याय सुविधाशुल्क, द्वारा हों न संचालित।

कसम खाएँ, घुटाला ना करेंगे, देश के नेता।
रूकेगा ताँण्डव सम्भावना तब ही अभय की है।

**

कृपा करो अविलम्ब

प्रभू अब कृपा करो अविलम्ब।
अवरोधों ने और विरोधो ने गाड़े हैं खम्ब।
प्रभु अब कृपा करो अविलम्ब।

भौतिकवादी युग में प्रतिभा मेरी पिछड़ रही है।
भक्त और भगवान प्रतिष्ठा सबकी बिगड़ रही है।
मेरी पहुँच आप तक ही है और नहीं अवलम्ब।
प्रभु अब कृपा करो अविलम्ब।

आतंकी हमलो से त्रस्त हो रही जनता सारी।
पुनः द्रौपदी की भाँति निर्वस्त्र हो रही नारी।
नक्सलवादी निर्पराध पर चला रहे हैं बम्ब।
प्रभु अब कृपा करो अविलम्ब।

अवसरवादी चाटुकार अब टंगड़ी मार रहे हैं।
शुद्ध सात्विक सत्य, खेल में निशि दिन हार रहे हैं।
पहुँच पूछ पर अपनी मुझको दिखा रहे हैं दम्ब।
प्रभु अब कृपा करो अविलम्ब।

सम्भवामि युगे-युगे को करो सार्थक नाथ।
पूरा न्याय करो हे भगवन, सुजन-दुष्ट के साथ।
सज्जन की रक्षा हो प्रभु जी, दुष्ट न पाए क्षम्ब।
प्रभु अब कृपा करो अविलम्ब।

बहुत दिया था पहले तुमने, बहुत दे रहे आज।
सदा सर्वदा सभी सँवारे, तुमने मेरे काज।
मेरी हर पुकार पर आए, कछु ना किया विलम्ब।
प्रभु अब कृपा करो अविलम्ब।

**

बादल भी बरसना भूल जाएँगे

हुईं ऋतुएँ अमर्यादित, हुई है प्रकृति रोगी।
इसी कारण कहीं सूखा, कहीं वर्षा अधिक होगी।

हमीं ने फूँक दीं ओजोन पर्तें गगन की सारी।
सघन वन काट डाले, छीन ली धरती से हरियारी।
गगन की सारी गरिमा, छीन लीं कुत्सित प्रदूषण ने।
ग्रहों की खोज में झेलें धरा ने परीक्षण भारी।

त्वचा के रोग कैंसर, यह सभी फैले विकीरण से—
कि अन्धी दौड़ भौतिकता की, जाने खत्म कब होगी।

नहर हमने बनाई, कागजों पर खा गए पैसा।
कुएँ तालाब खुदकर क्या हुए आश्चर्य ही कैसा।
छला तुमने सभी को, प्राकृतिक छलना जरा झेलो—
कहीं गजराज डूबा बाढ़ में, प्यासा कहीं भैंसा।

कहाँ पर बाढ़ राहत कोष का पैसा गया बोलो—
मिला उसको न जिसको जरूरत इसकी रही होगी।

हमारा देश औद्योगीकरण में बढ़ गया आगे।
मगर भोपाल गैसिक त्रासदी से हम नहीं जागे।
धुआँ चिमनी उगलती है, प्रदूषण खूब फलता है—
प्रदूषित कोप से पशु-पक्षियों ने प्राण भी त्यागे।

जो सोए हैं अभी वातानुकूलित कक्ष में मित्रो—
तभी जागेंगे जब सारी धरा श्मशानवत् होगी।

अरे दुष्टो! प्रदूषण को विकीरण को जरा रोको।
प्रदूषित कर रहा वातावरण जो वह धुआँ रोको।
नहीं रोका तो बादल भी बरसना भूल जाएँगे।
जो फैक्ट्री प्रदूषित जल उगलती है, उसे भी रोको।

नदी गर सूख जाएगी, तो कैसे बनेगी बिजली?
लपट तुम पर भी आएगी, धरा जब अग्निमय होगी।

**

चल त्याग कलम को तू हितेश

शिवजी का ले त्रिशूल और, हाथों में ले बघनखा वीर।
तू वीर शिवा का वंशज है, शत्रु का दे तू गला चीर।

क्या बगदादी आईएसआई, तेरे समक्ष सब बौने हैं।
तू कुरूक्षेत्र का सिंह, सामने तेरे सब मृगछौने हैं।
क्या सत्य कभी हारा है, जो अब हारेगा, मत हो अधीर–

गद्दार देश में जो भी हो, अनदेखा मत कर पकड़ उसे।
यदि कुत्ता पागल हो जाए, तो जंजीरों में जकड़ उसे।
अब जागो बनकर महाकाल, भारत माता पर पड़ी भीर।

घुसपैठ कर रहें हों जो भी, भेजो उनको श्मशान मित्र।
उसको भेजो न्यायालय को, जो काटे–छाँटे देश चित्र।
सीमा पर कड़ी सुरक्षा की, खींचो अभेद्य सुदृढ़ लकीर।

इससे पहले तुझ पर कोई, हमलावर हो तू हमला कर।
शत्रु हैं चारों ओर मित्र, ले पूर्ण सुरक्षा निकला कर।
हो सकता है आतंकी हो, जो तुझको दिखता है फकीर।

अब दूध दही के धोखे में, फिर खिला न दे कोई चूना।
गायों को काट रहा है जो, उनसे अनजान रहे तू ना।
जो भी संदिग्ध लगे तुझको, मत होना उसके बगलगीर।

अब वही बचेगा धरती पर, जो सर्वश्रेष्ठ है शक्तिमान।
चल त्याग कलम को तू हितेश, ले अपने कर में धनुष–बाण।
आतंकविहीन धरा कर दे, युग पुरुष उठा संधान तीर।

✱✱

राम तुम्हारा अभिनन्दन है

रावण तुमने संहारा था, पर रावण अब भी जिन्दा है।
वह भी रावण है जो, सत्पुरुषों की नित करता निन्दा है।
जो सबको गाली देता है, वह रावण से भी गन्दा है–
उसको मारो जिसके कारण, अन्तर्मन करता क्रंदन है।
राम तुम्हारा अभिनन्दन है।

देखो उस अबला नारी की, चेन खीचकर भागा कोई।
उसे ले गए अपहरण करके, जो माँ पास किशोरी सोई।
वह रावण है जिसके हाथों, अबला मान-प्रतिष्ठा खोई–
ऐसे सब रावण संहारो, हर मानव करता वन्दन है।
राम तुम्हारा अभिनन्दन है।

आतंकी, नक्सली या उग्री, यह सब रावण के वंशज हैं।
पूर्व जन्म लेकर उतरे यह, सारे कुम्भकरण अंशज हैं।
इनको मारो राम छुपे जिनके मन में निश्चर अंडज हैं–
हमें बचा लो राम तुम्हें, अर्पित तन-मन-रोली चन्दन है।
राम तुम्हारा अभिनन्दन है।

इनमें कुछ शराब पी-पीकर, रामायण मंचन करते हैं।
चन्दा दान-दक्षिणा लेकर, निज धन का संचन करते हैं।
ऐसे भी हत्यारे हैं जो, राम नाम गुंजन करते हैं–
इनको पहचानो पुरुषोत्तम, यह जीवन तुमको अर्पन है।
राम तुम्हारा अभिनन्दन है।

नित्य सहस्रों अबलाओं का, प्रभुवर शीलहरण होता है।
कहीं-कहीं तेजाब काण्ड से, जीवन एक मरण होता है।
हर दुष्कर्मी धन के बल पर, नेता चरण-शरण होता है–
नित्य-नित्य हो रहा राम जी, राक्षस कुल में सम्वर्धन है।
राम तुम्हारा अभिनन्दन है।

✱✱

नव सम्वतसर

धीरे-धीरे पुनः आ गया, नव सम्वतसर।
सबको शुभकर हो अपना यह नव सम्वतसर।

भारत की संस्कृति सभ्यता का प्रतीक है।
माँ जगदम्बा के व्रत से आरंभ नीक है।
मित्र पुरातन की पद्धति अपनी सटीक है।
सूर्य किरण हो गई आज से पूर्णतः प्रखर।
सबको शुभकर हो अपना यह नव सम्वतसर।

शीत गया है, निर्धन को अब चैन मिलेगा।
उपवन-उपवन सुभग सुगंधित पुष्प खिलेगा।
कोयल कूकेगी अमवा पर बौर हिलेगा।
सुखद सुवासित हवा बहेगी अब रुक-रुककर।
सबको शुभकर हो अपना यह नव सम्वतसर।

अँग्रेजी के नए वर्ष का करें विसर्जन।
नव सम्वत की प्रथम किरण का कर लें वंदन।
अपनी भाषा अपनी पूजा, रोली-चंदन।
भारत को भारत के मित्रो को हो भयहर।
सबको शुभकर हो अपना यह नव सम्वतसर।

नव सम्वतसर से अपना सम्मान विदित है।
भरत पुत्र भारतमाता का मान निहित है।
नव सम्वतसर से ही होना भाग्य उदित है।
हर भारतवासी को नव सम्वत हो शुभकर।
सबको शुभकर हो अपना यह नव सम्वतसर।

नव सम्वत से आरंभिक इस नए वर्ष में।
हर इच्छा हो पूर्ण कटे दिन रैन हर्ष में।
शुभ बोलें, शुभ सुने और शुभ रहे दर्श में।
तुमको शुभ हो, मुझको शुभ हो यह सम्वतसर।
सबको शुभकर हो अपना यह नव सम्वतसर।

**

जिन्दाबाद कहूँगा

जिस दिन संविधान से आरक्षण– धारा हट जाएगी।
राजनीति से तुष्टिकरण की– नीति जब मिट जाएगी।
जब समान आचार संहिता– जिह्वा पर रट जाएगी।
उस दिन इन्कलाब को मैं भी, फिर से जिन्दाबाद कहूँगा।
भारत को आजाद कहूँगा।

काश्मीर में पाकिस्तानी, झण्डे जब जल जाएँगे।
धारा तीन सौ सत्तर के जब, प्राविधान गल जाएँगे।
जब आतंकवादियों के हो, ढीले कस बल जाएँगे।
उस दिन इन्कलाब को मैं भी, फिर से जिन्दाबाद कहूँगा।
भारत को आजाद कहूँगा।

मिल जाएँगे मुख्यधार में, जिस दिन सब नक्सलवादी।
सत्ता का सम्मान करेंगे, उग्री या माओवादी।
जिस दिन काश्मीर पाएगा, पी.ओ.के. से आजादी।
उस दिन इन्कलाब को मैं भी, फिर से जिन्दाबाद कहूँगा।
भारत को आजाद कहूँगा।

जब स्वदेश में न्याय देश का, सुलभ और सस्ता होगा।
शिक्षा और चिकित्सा का जब, हाल नहीं खस्ता होगा।
जब गरीब की झोपड़ियों में, भी बचपन हँसता होगा।
उस दिन इन्कलाब को मैं भी, फिर से जिन्दाबाद कहूँगा।
भारत को आजाद कहूँगा।

दुष्कर्मी-बलात्कारी या भ्रष्टाचारी, रिश्वतखोर।
घोटाला करने वाले यह, राजनीति के सारे चोर।
इन समाज के सभी दुश्मनों, को जब होगा दण्ड कठोर।
उस दिन इन्कलाब को मैं भी, फिर से जिन्दाबाद कहूँगा।
भारत को आजाद कहूँगा।

जब दल-बदलु नेताओं पर, खुला न कोई दर होगा।
संसद बाधित करने वालो, के धड़ पर ना सर होगा।
चोरबाजारी और मिलावट, का धन्धा दुष्कर होगा।
उस दिन इन्कलाब को मैं भी, फिर से जिन्दाबाद कहूँगा।
भारत को आजाद कहूँगा।

अपने भारत राष्ट्र की भाषा, जब घोषित होगी हिन्दी।
न्यायालय सर्वोच्च के निर्णय, देने को होगी हिन्दी।
पत्रचार– निमंत्रण, शुभ– सन्देशों में होगी हिन्दी।
उस दिन इन्कलाब को मैं भी, फिर से जिन्दाबाद कहूँगा।
भारत को आजाद कहूँगा।

बाल श्रमिक, बन्धुआ मजदूरी जैसे शब्द नहीं होंगे।
आपस में कटु बोल न होंगे या अपशब्द नहीं होंगे।
सच कहने या सुनने वाले, जब निःशब्द नहीं होंगे।
उस दिन इन्कलाब को मैं भी, फिर से जिन्दाबाद कहूँगा।
भारत को आजाद कहूँगा।

बहरी जब सरकार न होगी, गूंगी ना होगी जनता।
जनता के हित, जनता द्वारा, जनता की होगी सत्ता।
भारत में भारतमाता के, शत्रु न होंगे अलबत्ता।
उस दिन इन्कलाब को मैं भी, फिर से जिन्दाबाद कहूँगा।
भारत को आजाद कहूँगा।

जब कश्मीरी पंडित वापस अपने स्व-घर जाएँगे।
खोया घर, दर, मान और सम्मान सभी पा जाएँगे।
पहले जैसी घात न होगी, पूर्ण सुरक्षा पाएँगे।
उस दिन इन्कलाब को मैं भी, फिर से जिन्दाबाद कहूँगा।
भारत को आजाद कहूँगा।

✸✸

हे परशुराम

हे परशुराम, हे जामदग्नेय, जागो महेन्द्र पर्वत छोड़ो।
सर उठा रहे अत्याचारी इस समय, समाधि को तोड़ो।
आतंकवाद से त्रसित, ग्रसित, धरती माँ का क्रन्दन सुनकर–
शिव धनुष भंग के समय आये थे जैसे, वैसे ही दौड़ो।

हैं बिलख रहीं अनगिन माँएँ, अनगिन विधवाएँ शोक ग्रस्त।
हर नगर-नगर में– हर घर में, आतंकवाद से सभी त्रस्त।
विस्फोट हो रहे मन्दिर में, रेलों, बस, वायुयानों में–
हर ओर मचा है त्राहिमाम्, निर्भीक घूमते असुर मस्त।

त्यागो समाधि को ब्रह्मश्रेष्ठ, जाग्रत हो फिर परशु कर–का।
भय मुक्त करो यह वसुन्धरा, फिर रक्त बहे शत्रु सर का।
बस एक बार आतंकवाद से हो विहीन, सारी धरती–
हो गर्जनाद, हो सिंहनाद, उर दहल उठे हर निश्चर का।

जो दिये राम को धनुष बाण, फिर से उनकी टंकार करो।
आतंकी, नक्सलवादी, उग्रवादियों– का संहार करो।
प्रकटो-प्रकटो हे भृगुनन्दन, बढ़ गये असुर भारत भू पर–
अब देर अबेर करो मत ना, परशु से पुनः प्रहार करो।

घर का हो चाहे बाहर का, दो देशद्रोह में प्राण दण्ड।
हो नष्ट सभी, जो भारत को, कर रहे आज फिर खण्ड-खण्ड।
सत्तालोलुप-आतातायी, पथ-भ्रष्टों का मदमर्दन हो–
दिग्विजय करें– फिर भरत पुत्र, भारत भूमि हो फिर अखण्ड।

✱✱

अभिनन्दन

हे वीर तुम्हारा अभिनन्दन– रणधीर तुम्हारा अभिनन्दन।

तुम सीमा पर रणवीर खड़े, चौकसी कर रहे हो डटकर।
घुसपैठ नहीं कर पाता है, आतंकी हो, चाहे तस्कर।
है देश सुरक्षित तुमसे ही, बलवीर तुम्हारा अभिनन्दन।
हे वीर तुम्हारा अभिनन्दन– रणधीर तुम्हारा अभिनन्दन।

तुम जागरूक हो सीमा पर, तब देश सुरक्षित सोता है।
शत्रु को मार गिराते हो, माँ सर गर्वोन्नत होता है।
आतंकी का सर कलम करो, शमशीर तुम्हारा अभिनन्दन।
हे वीर तुम्हारा अभिनन्दन– रणधीर तुम्हारा अभिनन्दन।

हो तेज धूप या बर्फ पड़े, रहते हो तुम मुस्तैद सदा।
विचलित तुम होते नहीं वीर, चाहें आए कोई विपदा।
शत्रु तुमसे भय खाता है, अति वीर तुम्हारा अभिनन्दन।
हे वीर तुम्हारा अभिनन्दन– रणधीर तुम्हारा अभिनन्दन।

क्या भूख-प्यास, क्या नींद तुम्हें, चिन्ता इनकी होती ही नहीं।
अवचेतन में भी चेतन है, तव आँख कभी सोती ही नहीं।
सीमा की रक्षा को रहते, गम्भीरं तुम्हारा अभिनन्दन।
हे वीर तुम्हारा अभिनन्दन– रणधीर तुम्हारा अभिनन्दन।

हम करने आए हैं साथी, वीरता तुम्हारी को प्रणाम।
हे शक्ति पुंज, हे शूरवीर, ऊँचा रखना भारत ललाम।
गद्दारों से चौकस रहना, मति धीर तुम्हारा अभिनन्दन।
हे वीर तुम्हारा अभिनन्दन– रणधीर तुम्हारा अभिनन्दन।

✱✱

आँखें बन्द कर लें

हवा में दुर्गन्ध सी है, कहीं मानस गन्ध सी है।
जिस कलम से लिख रहा था, वह कलम भी बन्द सी है।
अब समय कैसे कटेगा, कोहरा कैसे छँटेगा।
लग रहा है कहीं मानवता मरी है,
या किसी ने अस्मिता नंगी करी है,
फिर किसी ने हरण सीता का किया है–
या कहीं पर द्रौपदी व्याकुल खड़ी है।
मैं बहुत मजबूर क्यों हूँ, स्वयं से भी दूर क्यों हूँ,
लग रहा है आँधियों का समय से अनुबन्ध भी है,
हवा में दुर्गन्ध सी है, कहीं मानस गन्ध सी है।
भावनाएँ आज क्यों गन्दी हुईं हैं,
आत्माएँ किसलिए बन्दी हुईं हैं,
सच कहेगा जो उसे मृत्यु मिलेगी–
विधिक धाराएँ सभी अँधी हुई हैं,
न्याय अन्धा हो गया है, मात्र धन्धा हो गया है,
पारदर्शी मान्यताओं पर, लगा प्रतिबन्ध भी है,
हवा में दुर्गन्ध सी है, कहीं मानस गन्ध सी है।
जागता है कौन जब हम सो रहे हैं,
पा रहा है कौन, जब हम खो रहे हैं,
भावना-सम्भावना में द्वंद्व सा है–
हँस रहा है समय, हम ही रो रहे हैं,
कौन बाँधेगा समय को, कौन रोकेगा प्रलय को,

पुनः सिंहासन से बन्दी, भीष्म की सौगन्ध भी है,
हवा में दुर्गन्ध सी है, कहीं मानस गन्ध सी है।
चलो सागर में डूबा दें संस्कृति को,
सौंप दें धरती समूची प्रकृति को,
जो घटे घट जाए आँखें बन्द कर लें–
भूल जाएँ हम स्वयं ही आकृति को,
कामना अन्धी हुई हैं, वासना हावी हुई है,
प्रवृत्ति भस्मासुरी फिर लग रही स्वच्छन्द सी है,
हवा में दुर्गन्ध सी है, कहीं मानस गन्ध सी है।

✱✱

करिश्मा देखिये

देखना है तो अदालत में करिश्मा देखिये।
ऊँट बैठायेगा किस करवट मुकद्‌मा देखिये।

खुल गई है न्याय की देवी की पट्टी आँख से,
किन्तु जो पहना हुआ है उसने चश्मा देखिये।

ढूँढता है रोशनी इन्साफ की लेकिन हितेश,
इन हवाओं में जलेगी कैसे शम्‌आ देखिये।

खेल है सारा सबूतों का वगरना कुछ नहीं,
झूठ या सच पर गवाही का मुलम्मा देखिये।

रो रहा है भूख से व्याकुल पिता की गोद में,
मर गई कानून की क्या आज अम्मा देखिये।

बिक रहा है आज सब कुछ देश के बाजार में,
सिर्फ खाली जेब को हाले पशेमाँ देखिये।

लुट गया है इस मुकदमें में सभी कुछ जेब का,
श्री छदम्मी लाल को बनता छदम्मा देखिये।

✸✸

पद्मविभूषण मिल जाएगा

अवसरवादी बनो और सत्ता के कुछ करीब आ जाओ।
तुमको भी सम्मान मिलेगा थोड़ा चापलूस हो जाओ।

युगों-युगों से केवल राज पुरुष ही सम्मानित होते हैं,
प्रतिभा को घर पर बैठाकर केवल सरकारी गुन गाओ।

सिंहासन तक पहुँच गये तो पद्मविभूषण मिल जायेगा,
केवल मात्र साधना के बल कुछ न मिलेगा मन समझाओ।

बहुत करी एकान्त साधना, बने स्वयंभू रहे अपरिचित-
अगर सफल होना है तो तुम सत्ता में इक बाप बनाओ।

कोई नेता मंत्री तुमको गोद यदि ले ले तो भईया,
चाटुकारिता बड़ी चीज है, इसमें ही प्रतिभा दिखलाओ।

सत्ता का गुणगान करोगे, हुकुम का इक्का बन जाओगे,
सौतेले ही सही, हो सके, तो तुम राजपुत्र बन जाओ।

सफल साधना के बल पर भी तुम्हें नहीं पहचान मिलेगी,
अर्जुन बनकर जियो, कृष्ण के कृपापात्र बनकर सुख पाओ।

एकलव्य यदि बने रहे तो पुनः अँगूठा कट जायेगा,
साथ समय के चलना सीखो, खुद में भी परिवर्तन लाओ।

**

विश्वासघात है

परिवर्तन है नियम प्राकृतिक, इससे कोई नहीं अछूता।
धर्मान्तरण– भी परिवर्तन है, कहकर गया है इब्नेबतूता।

मुगलकाल से पहले शायद, धर्मान्तरण नहीं होता था,
स्वधर्मे मरणम् श्रेयम् का शिव संकल्प हृदय होता था।

मुगल काल में अनगिन हिन्दू, जबरन मुस्लिम गए बनाए,
अँग्रेजों ने मजबूरो के, धर्मान्तरण बहुत करवाए।

अनगिन मुस्लिम ऐसे हैं, जिनके पूर्वज हिन्दू त्यागी थे,
धर्मान्तरण से बचे रहे जो, ऐसे व्यक्ति बड़भागी थे।

वर्ष सहस्त्रों से धर्मान्तरण होता आया और हो रहा,
सत्ता के विपक्ष में बैठा, सदन आज किसलिए रो रहा।

मुस्लिम और ईसाई, हिन्दू होते हैं तो गलती क्या है?
उनकी पुनः वापसी घर में, होने से बदमजगी क्या है?

धर्मान्तरण एक मुद्दा है, सामाजिक सांसद क्यों उलझें।
भूल हमारी है संसद में, क्यों भेजे सांसद अनसुलझे।

इस पर राजनीति का करना, सोच-समझ की बात नहीं है।
स्वेच्छा से हो अगर धर्म-परिवर्तन तो आघात नहीं है।

नियम और कानून हमेशा, जबरन मुद्दों पर बनते हैं।
जहाँ सहमति हो ऐसे कुछ, मुद्दों पर क्यों हम तनते हैं।

संसद में गतिरोध कर रहा है, विपक्ष विश्वासघात है।
इसका उत्तर जनता देगी कल, उसको संज्ञान तात है।

**

शुभकामना

नव सम्वतसर और होलिका की तुमको रंगोली शुभ हो।
सतरंगी खुशियाँ जीवन में आयें कुछ भी नहीं अशुभ हो।

मेरी शुभकामना तुम्हें है, तुम ऊँचे नेता बन जाओ।
कुछ करोड़ का दाँव लगाकर संसद का चुनाव लड़ जाओ।
जीत गये तो मेरे भैय्या, पो बारह क्या इक्किस होंगीं।
गुँजिया, मठरी और मिठाई, काजू होंगे, किसमिस होंगीं।

अवसर अगर मिल मया तुमको खेल-खेल में घोटाले का।
तब फिर राजा बन जाओंगे, मुँह खुल जायेगा ताले का।
बने रहे ईमानदार यदि, तो भी पाँच करोड़ मिलेंगे।
सांसद निधि तो पाओगे ही और रास्ते भी निकलेंगे।

एक सत्र के बाद तुम्हारा धन, बल इतना बढ़ जायेगा।
बाली जैसा प्रतिद्वन्दी का आधा बल तुम में आयेगा।
धीरे-धीरे पुत्र, पुत्रवधु सभी विधायक बन जायेंगे।
तुमको भी जनता पूजेगी, वह भी लायक कहलायेंगे।

यात्राएँ विदेश की होगीं, सारी खर्चे पर सरकारी।
राजकोष से फिर खरीदना पत्नी की छह सुन्दर सारी।
मजे उड़ाना मौज मनाना, हाई कमान को भी खुश रखना।
हाँ प्रधानमंत्री का भी तुम, कभी-कभी छू लेना घुटना।

कुछ मत करना केवल अपने बैंक वोट को करना पक्का।
हर चुनाव में जीत तुम्हारी, सबै करेगी हक्का-बक्का।
बस चुनाव आने वाले है, फिट अपनी गोटियाँ बिठाओ।
साम-दाम से दण्ड भेद से एक टिकट संसद का पाओ।

दस-दस बार बना जो सांसद ऐसे को तुम गुरु बनाओ।
राजनीति क्या है यह समझों, राजनीति से ब्याह रचाओ।
जीवन सफल तभी होगा जब, मेरी शुभकामना फलेगी।
सांसद निधि से भी विकास की, नई-नई सूरत निकलेगीं।

पुनः- औपचारिक होता हूँ, शुभकामना तुम्हें देता हूँ।
जीवन में तुम रहो सफलतम्, वचन कर्म मन से कहता हूँ।

✲✲

जाग नगपति

अरे हिमालय अब तो डोल।
जन-जनार्दन की जय बोल।

अन्धा केवल बाँट रहा है, रेवड़ियाँ अपने-अपनों को।
र्निदोषों का लहू बहाकर, सींच रहा है निज सपनों को।
बहुत सो चुका जाग नगपति, कुःशासन अवगुण्ठन खोल।
अरे हिमालय अब तो डोल।

वातानुकूलित कमरों में, बैठे नेतागण कहते हैं।
कोई नहीं शीत से मरता, सब अपनी आई मरते हैं।
साइबेरिया इन्हें भेज दे, इनकी खुल जाएगी पोल।
अरे हिमालय अब तो डोल।

पाँच रुपये में पेट भराऊँ, दिल्ली में खाना मिलता है।
भर सकता है पेट रूपैया, कहकर अब्दुल्ला हँसता है।
छप्पन व्यंजन खाने वालों, का भी जरा बजा दे ढोल।
अरे हिमालय अब तो डोल।

कुछ तो ऐसा कर अब जिससे, छुटकारा हो मक्कारों से।
लूट रहे जो देश- बनें हैं देशभक्त, इन गद्दारों से।
नए सृजन की गाथा लिख दे, नवप्रभात अब करे किलोल।
अरे हिमालय अब तो डोल।

सोए सभी देवतागण हैं, केवल निशचर जाग रहे हैं।
खोए हैं शुक– कोयल, मैना, भाषण देते काग रहे हैं।
खींच उन्हें अब सिंहासन से, जिनकी हुई न नाप न तोल।
अरे हिमालय अब तो डोल।

✵✵

व्यवधान आयेंगे

बहुत व्यवधान आते हैं, बहुत व्यवधान आयेंगे,
चलोगे जब कभी तुम, सामने तूफान आयेंगे।

जहाँ भी लक्ष्य होगा, छुपी दल-दल भी वहीं होगी,
अगम गहराईयों में ही मणिक शतदल वहीं होगी।
बनोगे कूप के मडूक तो कुछ भी नहीं मिलना,
शिखर कैसे छुओंगे, गर नहीं हिम्मत प्रबल होगी।

लगन हो काज करने की, भरी हो बिजलियाँ तन में,
अगर उछलोगे उस तट पर, तभी इस पार आओंगे।

बहुत होंगे जो तुमको रोकना चाहेंगे राहों में,
तुम्हें देंगे निमंत्रण भी, सिमट जाने को बाँहों में।
कभी आलस्य घेरेगा, थकन चेतावनी देगी,
सहस्त्रों वासनाएँ तैर जाएँगी निगाहों में।

कभी मुड़कर न पीछे देखना, आवाज को सुनकर,
लुभने को तुम्हें मद्य, मोह, मत्सर, लोभ आएँगे।

तपस्या भंग करने को, कहीं पर मेनका होगी,
कहीं दिन का उजाला, या कहीं पर तम निशा होगी।

चसक ले द्वार मधुशाला के, मधुबाला अगर देखो,
जरा बचकर निकलना, वह पतन की यवनिका होगी।

स्वयं के साथ तुमको, मित्र का सम्मान भी प्रिय हो,
भले ही शत्रुओं के द्वार से अपमान आएँगे।

पिपासा एक हो बस मित्र अपने लक्ष्य की तुमको,
पिया है दूध जिसका मातृ के उस वक्ष की तुमको।
न रुकना राह में कोई प्रलोभन दे भले कितना,
है अन्तिम छोर पर स्थित, कसम उस कक्ष की तुमको।

बहुत विश्वस्त है सहयात्री, पर द्रग खुले रखना,
कई इस यात्रा में बेचकर, ईमान आएँगे।

**

क्या कहिए

जो स्वदेश की बात नहीं करते हैं, उनको क्या कहिए।
पाकिस्तान समर्थक हैं जो, भैय्या उनको क्या कहिए।

देशभक्त जो भी नेता हैं, उनको कहें रामजादे तो–
देशद्रोह में लिप्त, विषैले–नेता उनको क्या कहिए।

खुलेआम गाली देते हैं, पी.एम. को हत्यारा बोले–
बद्‌जुबान जो भी नेता हैं, बोलो उनको क्या कहिए।

जरा–जरा सी बातों को जो, बना बतगंड़ झूम रहे हैं–
संसद चलने नहीं दे रहे, हैं जो उनको क्या कहिए।

जो विकास की नहीं सिर्फ, सत्ता विरोध की बातें करते–
विद्यमान हैं जो विपक्ष में, नेता उनको क्या कहिए।

लोकतंत्र के हत्यारे हैं, जन–गण–मन के जो दुश्मन हैं।
ऐसे खद्‌दरधारी जो हैं, जनता उनको क्या कहिए।

वंशवाद के प्रबल समर्थक, दस–दस बार रहे जो सांसद–
जनता के भी सगे नहीं हैं, जो अब उनको क्या कहिए।

कंस सरीखे राजनीति में, जो कैंसर की तरह घुसे हैं–
घोटाला करते आए हैं, अब तक उनको क्या कहिए।

जो केवल अपशब्द बोलकर, राजनीति को चमकाते हैं–
स्वयं बताएँ, अमर्यादित नेता– उनको क्या कहिए।

✸✸

अभिनंदन है नये वर्ष का

अभिनंदन है,
नये वर्ष के, प्रथम दिवस की प्रथम किरण का अभिनंदन है,
नया वर्ष उन सबको शुभ हो, जिनका अंर्तमन चंदन है।
सारे सत्यनिष्ठ सत्कर्मी, सज्जन का मन से वंदन है,
अभिनंदन है।

सुख से सोयें वह, जो सबको सुख देते हैं,
दुख सह कर भी सबकी पीड़ा हर लेते हैं।
जिनके, कर्म सत्य और हितकर हितेश हों–
ऐसे मानव मन में कभी न दुख सेते हैं।

उनके घर-आँगन सुख बरसे, जिनका मन सच्चा कुंदन है,
नया वर्ष उन सबको शुभ हो, जिनका अंर्तमन चंदन है।

सीमा के रक्षा प्रहरी को मिले सुरक्षा,
शिक्षा का प्रकाश चहुँदिश हो, मिटे अशिक्षा।
परहित को जो पूर्ण समर्पित है उन सबकी,
मेरे राजा राम करेंगे पूरी रक्षा।

पूरी हो हर इच्छा उनकी जिनका मन दानी कंचन है,
नया वर्ष उन सबको शुभ हो, जिनका अंर्तमन चंदन है।

घोटाला करने वालों को रास न आये,
देशद्रोहियों के जीवन में हास न आये।
बुझा रहे जो दीपक, इसके उसके घर का–
उनके जीवन में उजियारा पास न आये।

उनको शुभ हो जिनके मन में देश धर्म का स्पंदन है,
नया वर्ष उन सबको शुभ हो, जिनका अंर्तमन चंदन है।

नया वर्ष आतंकवादियों को भारी हो,
अंग-भंग हो उसका जो बलात्कारी हो।
आरक्षण तो नहीं, सुरक्षा रहे सभी की,
गद्दारों के लिए वर्ष नव भयकारी हो।

वंचित कृष्ण कृपा से हो वह, जिसकी क्रीड़ा परनिंदन है,
नया वर्ष उन सबको शुभ हो, जिनका अंर्तमन चंदन है।

**

जान ले

सारा हिन्दुस्तान जान ले
उट्ठा है तूफान जान ले
गद्दारों को नहीं मिलेगा
क्षमा, दया का दान जान ले।

कसम तिरंगे झण्डे की है
बापू के उस डण्डे की है
जिसने हिला दिया था भईया
सारा इँग्लिस्तान जान ले।

दलबदलू सब नेताओं का
पापिष्ठा अभिनेताओं का
नग्न नाचती अभिनेत्री का
होना है अवसान जान ले

आतंकी या नक्सलवादी
उग्वाद या माओवादी
छुटकारा इनसे पाना है
कसम शिवा की आन जान ले।

संविधान से आरक्षण में
अंतर्मन से तुष्टिकरण में

परिवर्तन करने की खातिर
जागा-जन-अभियान जान ले।

जगा-हिमालय जागा सागर
उबल रही धीरज की गागर
दागी मंत्री सहन न होगे
जायें चाहें प्राण जान ले।

घोर नपुंसक और शिखंडी
दिखती नहीं जिन्हें पगडंडी
पूंछ हिलाऊ नेता सारे
त्यागें पद अभिमान जान ले

अब भी अगर नहीं जागे तो
कुर्सी के पीछे भागे तो
मुश्किल होंगे प्राण बचाने
रोयेगी संतान जान ले।

**

होली का त्यौहार मनाएँ

होली का त्यौहार मनाएँ।

उतरे नीले नभ से भू पर, इन्द्रधनुष जैसी फुलवारी।
टेसू के रंग से पिचकारी, गीली कर दें दुनिया सारी।
मधुमासी सारा मौसम हो, पवन चले मादक मतवारी–
चारों तरफ रंग ही रंग हो, खूब अबीर गुलाल उड़ाएँ।
होली का त्यौहार मनाएँ।

काले, नीले रंग नहीं हों, भाव कहीं बदरंग नहीं हो।
बात कहीं बेढंग नहीं हो, भंग छने हुड़दंग नहीं हो।
प्रेम-भाव संकुचित नहीं हो, सोच हमारी तंग नहीं हो–
जिसको हो परहेज रंग से, उस पर क्यों हम रंग लगाएँ।
होली का त्यौहार मनाएँ।

वैमनस्य का भाव नहीं हो, मन में कहीं दुराव नहीं हो।
गले मिले अपने-अपनों से, अजनबियों का चाव नहीं हो।
दे सम्मान सभी को मन से, इसमें कहीं अभाव नहीं हो–
घृणा नहीं हो, द्वेष नहीं हो, प्रेम सुधा सब पर बरसाएँ।
होली का त्यौहार मनाएँ।

थालों में पकवान भरे हों, गालों पर थोड़ा गुलाल हो।
तन-मन सराबोर हो रंग से, थोड़ी मस्ती भरी चाल हो।
सुखमय हो त्यौहार हमारा, कहीं नहीं कुछ भी धमाल हो–
गुंजिया, मठरी, दही, पकौड़ी, जो भी आए उसे खिलाएँ।
होली का त्यौहार मनाएँ।

शुभ हो यह त्यौहार सलोना, नाच उठे तन-मन का कोना।
धरती ऐसे सजे की जैसे, दुल्हन करके आई गौना।
आने वाला कल भी शुभ हो, अशुभ नहीं हो कुछ अनहोना-
सबके लिए समर्पित मित्रों, है हितेश की सुकामनाएँ।
होली का त्यौहार मनाएँ।

**

षडयंत्र घिनौना

पाकिस्तानी जन्म विश्व को, शांति की सौगात नहीं है।
हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धों पर, खुशियों की बरसात नहीं है।

भारत में दहशत फैलाना, एकमात्र उद्देश्य हो जिसका-
क्या मैत्री सम्बन्धों पर यह, खुला हुआ आघात नहीं है।

आतंकी हमलों का होना- सीमा पर गोली बरसाना-
पाकिस्तानी फौजों की क्या, नफरत भरी बिसात नहीं है।

मेरे कई दोस्त मुस्लिम हैं, सच्चे वफादार हैं सारे।
लेकिन राजनीति के आगे, चलती उनकी बात नहीं है।

जनता, मैत्री, रिश्तेदारी सब कुछ चाह रही आपस में।
पर हाफिज सईद जैसों से, मिलती दिखी निजात नहीं है।

बँटवारा भारत का था षडयंत्र घिनौना अँग्रेजों का।
सकल विश्व यह जान चुका है, लुका-छिपी शह-मात नहीं है।

पाकिस्तान और चीन की, सरल नहीं है चाल समझना-
इनके अभिवादन में छल है, सच्ची तस्लीमात नहीं है।

लेकिन अभी आस बाकी है, कभी खत्म दुश्मनी होगी।
जिसकी सुबह नहीं होती हो, ऐसी कोई रात नहीं है।

✱✱

शुभ हो तुमको यह दीवाली

मित्र अँधेरा बहुत घना है, आओ इसको दूर भगायें।
दीपक से तम नहीं घटेगा, आओ एक मशाल जलायें।

देख रहे हो नाग रेंगते, नक्सलियाँ आतंकवाद के।
हर दीपक को घेर रहे हैं काले साये उग्रवाद के।
घर के अन्दर भ्रष्टाचारी, चुरा रहे हैं तेल दिये का–
वामाचारी माओवादी वाहक हैं केवल विवाद के।

देशमुक्त हो हर साये से आओ ऐसी ज्योति जगायें।
दीपक से तम नहीं घटेगा, आओ एक मशाल जलायें।

सोने की इस भारत माँ को सब ही नोंच-खसोट रहे हैं।
एकमात्र उद्देश्य हमारा, मतदाता के वोट रहे हैं।
तुष्टिकरण और आरक्षण यह दो भूत-प्रेत हावी हैं,
हम अफसर की हर नेता की निष्ठा केवल नोट रहे हैं।

उलझी-उलझी पगडण्डी पर आओ अपनी राह बनायें।
दीपक से तम नहीं घटेगा, आओ एक मशाल जलायें।

कई प्रलोभन हैं जीवन में उलझ न जाना खो मत जाना।
छलना की मय पीकर मितवा बेसुध बेदम हो मत जाना।
तुम पर है दायित्व देश की हर उलझन को सुलझाने का,
जन जागरण तुम्हें करना है बीच राह में सो मत जाना।

क्षमा करो मैं भूल गया हूँ दीवाली-औपचारिकताएँ
दीपक से तम नहीं घटेगा, आओ एक मशाल जलायें।

शुभ हो तुमको यह दीवाली हो प्रकाशमय राह तुम्हारी।
पुरजन परिजन सुखी रहें सब पूरी हो हर चाह तुम्हारी।
भारतमाता का आवाह्न लेकिन भईया भूल न जाना,
सफल नहीं होने देनी है आज किसी की भी गद्दारी।

तुम उट्ठोगे देश उठेगा, सब पूरी होंगी आशाएँ
दीपक से तम नहीं घटेगा, आओ एक मशाल जलायें।

✸✸

गंगा सूख गई

सबका देख आचरण नंगा-गंगा सूख गई,
चहुँदिशि देखा होता दंगा-गंगा सूख गई।
संसद में जाकर बैठे है डाकू चोर लुटेरे,
पापात्माओं ने, विधायिका में डाले हैं डेरे।
प्रजातंत्र में सबकुछ संख्या बल पर आधारित है,
कविता-सविता, मधुमिता के हत्यारे बहुतेरे।
अपराधी चुनाव लड़ते है, बाहुबली जेलों से,
प्रजातंत्र की देख दुर्गति-गंगा सूख गई।
दस-दस बार विधायक सांसद बल प्रयोग से बनते,
जेलों के भीतर रहकर भी, इनके खेमे तनते।
नोट-चोट के कारण, केवल वोट उन्हीं को मिलते,
या फिर वोटर डर से घर के बाहर नहीं निकलते।
वही पुराने चेहरे संसद और विधानसभा में,
देख, दुखी, प्रत्येक सत्र में-गंगा सूख गई।
उग्रवाद, नक्सली और आतंकी, उल्फावादी,
इनके हमलों ने विकास की प्रगति बहुत घटा दी।
सारा देश, असहाय और बौना है इनके आगे,
नये-नये बम विस्फोटों ने सब धरती दहला दी।
सारा देश एक हो तो आतंकवाद मिट जाये,
इसी सोच में डूबी, दुखिया-गंगा सूख गई।
पुत्री, पिता, बहन, भाई के देख कलयुगी नाते,
है स्तब्ध, समाज देख सुनकर, यह कलुषित बातें।

मित्रों-मित्रों, भाई-भाई में अब छल होता है,
नित्य नई छल कपट, द्वेष की सोची जाती घातें।
सत्य सभ्यता और संस्कृति, गर्व हमें था जिस पर,
उसके चीर हरण से, विह्वल-गंगा सूख गई।
अनगिन रावण, कंस और भस्मासुर घूम रहे हैं,
जो फरार थे, अब पाकर, अंगरक्षक झूम रहे हैं।
बलात्कार, व्यभिचार, अपहरण-आम हुई घटनाएँ,
बने नयनसुख वह जो कल तक, यारों बूम रहे हैं।
पापात्मा बढ़ गये हितेश, गंगा लहरों से ज्यादा,
कलयुग हुआ निहाल-तारिणी-गंगा सूख गई।

**

लिखो

दर्दे दिल पर लिखो, पीर मन की लिखो,
कुछ धरा की लिखो, कुछ गगन की लिखो,
राजनीति लिखी पर तुम्हें क्या मिला–
प्यार में जो मिली उस तपन पर लिखो।

राष्ट्रभक्ति में तुम डूबकर खो गए,
अपनी पीड़ा हृदय में लिए सो गए।
बस बहुत लिख चुके देशभक्ति मियाँ,
अब किसी कामनी के नयन पर लिखो।

राजनेता किसी का ना होता सगा,
सत्ता पाई इधर बस उधर की दगा,
चाहे मोदी, मुलायम हो या सोनिया–
मत कभी अब किसी के कथन पर लिखो।

मेरा क्या, मुझको क्या एक सिद्धान्त है,
यह मिटेगा नहीं आद्योपान्त है,
व्यर्थ है गंगा तट पर करो प्रार्थना–
पी–पिलाकर मदिर आचमन पर लिखो।

पद्मभूषण तुम्हें भी मिलेगा मगर,
स्वर्ण की उनके घर तक बना दो डगर,
चाटुकारी या मौकापरस्ती करो–
योग्यता का नहीं है चलन पर लिखो।

यह धनाढ्यो का युग है तुम्हारा नहीं,
तुमको पढ़ना किसी को गवारा नहीं,
मात–गंगा को साहित्य सब सौंपकर–
मौत पर अपनी अपने कफन पर लिखो।

✱✱

जाग

उठ जाग भैरवी जाग-जाग।
अब पुनः रक्त से खेल फाग।
डस रहे हमारे सैनिक को–
फिर पाकिस्तानी छद्‌म नाग।
उठ जाग भैरवी जाग-जाग।

सेनाएँ पत्थर झेल रहीं।
कायर हाथों में खेल रहीं।
अपने नेताओं के मन में–
भर सके तो भर दे आज आग।
उठ जाग भैरवी जाग-जाग।

'सबका' हो चाहे बीजेपी।
चाहत है केवल कुर्सी की।
शत्रु के हमले पर सारे–
निन्दा का रटते सिर्फ राग।
उठ जाग भैरवी जाग-जाग।

हर हमले पर केवल विरोध।
संसद को आता नहीं क्रोध।
किन्नर जैसे नेताओं के–
सर पर अपयश के उड़ा काग।
उठ जाग भैरवी जाग-जाग।

रणचण्डी बन, तू ज्वाला बन।
मिट्टी कर दे शत्रु का तन।
अब मात प्रलय का हो नर्तन–
उजड़े ना भारत में सुहाग।
उठ जाग भैरवी जाग-जाग।

केवल कुर्सी, केवल सत्ता।
कुछ और न करते अलबत्ता।
हिन्दुत्व निगलता कलकत्ता–
यह उगल रहे हैं सिर्फ झाग।
उठ जाग भैरवी जाग-जाग।

नर बलि चाहिए तो मैं हूँ।
हर शत्रु का शत्रु मैं हूँ।
मैया तेरे संग-संग मैं हूँ–
निकला हूँ जीवन मोह त्याग।
उठ जाग भैरवी जाग-जाग।

✱✱

जनता जाग्रत है

मैं विनती करता हूँ सांसद, संसद में ना गतिरोध करें।
केवल सार्थक हो उचित जहाँ, सत्ता का वहाँ विरोध करें।

कट्टरवादी सम्भाषण से, सत्ता सांसद परहेज करे।
छोटी-छोटी सी बातों पर, हो बहस विपक्ष गुरेज करे।

सत्ता को थोड़ा अवसर दें, गतिमय विकास को होने दें।
सत्ता विपक्ष दोनों का है, दायित्व समय ना खोने दें।

जनता ने जो विश्वास किया, अब उसमें कोई घात न हो।
जिससे झगड़े-दंगे भड़कें, अब ऐसी कोई बात न हो।

योगी, जोगी, साध्वी, साक्षी, कुछ करें नियंत्रण वाणी पर।
भागवत, सिंघल हिन्दुत्व अभी, थोपे ना भारत प्राणी पर।

मोदी जी को भी करने दें, भारत विकास का काम अभी।
जो सोचा है वह करने दें, होने ना दें गुमनाम सभी।

सत्ता सांसद संयम रखे, समयानुकूल सम्भाषण हो।
जो भावनाओं को भड़काए, किसलिए अनर्गल भाषण हो।

जनता जाग्रत है जो कोई, गति को विकास की रोकेगा।
संसद को अर्थहीन मुद्दों, पर जो कोई भी टोकेगा।

आने वाले कल जनता भी, उसको तगड़ा झटका देगी।
उसको तारे दिखला देगी, पथ में रोड़े अटका देगी।

संसद के कार्यो में जो भी, रोड़ा अटकाएगा हितेश।
जनता ऐसे जनप्रतिनिधि को, सम्मान नहीं देगी विशेष।

धर्मान्तरण, मन्दिर राम सरीखे, मुद्दों को ना उठने दें।
भारत विकास के कार्यो को, संसद में जरा न रूकने दें।

पहले विकास आवश्यक है, बाकी सब कुछ है गौण अभी।
जब तक ये लक्ष्य न हो पूरा, रखना है सबको मौन अभी।

जो हुआ चलो उसको भूलें, अब संसद में गतिरोध न हो।
हो खुली बहस चर्चा लेकिन, कार्यो में कुछ अवरोध न हो।

यह शीतकाल का सत्र, चढ़ गया भेंट कार्य कुछ हुआ नहीं।
हो गए करोड़ों खर्च, देशहित लाभ किसी को हुआ नहीं।

विश्वासघात है जनता से, संसद में जो गतिरोध करे।
जनता जाग्रत होकर उसको, घर-बाहर पूर्ण विरोध करे।

मेरे इस नम्र निवेदन पर, सत्ता विपक्ष अब करें ग़ौर।
हो चुका बहुत गतिरोध सहन, अब बिलकुल होगा नहीं और।

**

शुभ गणतंत्र दिवस हो

शुभ गणतंत्र दिवस आया है, भारत माता की जय बोल।
अद्‌भुत झांकी देख धरा पर, बाहर निकल तोड़कर खोल।
शुभ गणतंत्र दिवस हो बोल।

पहली बार हुआ भारत में, लोकतंत्र स्थापित देख।
हारा है परिवार तंत्र जो, रहा लांघता लछमन रेख।
आज खुली है जनता को जो, लूट रहे थे उनकी पोल–
शुभ गणतंत्र दिवस हो बोल।

जो अपशब्द बोलते आए हैं, उनके हर शब्द परख।
खिसियाये से बैठे हैं जो, उधर विभीषण उन्हें निरख।
भारत की एकता जाग्रत हुई, बदल देगी भूगोल।
शुभ गणतंत्र दिवस हो बोल।

जन-धन को जो लूट रहे थे, उन्हें समय ने लूटा है।
देशद्रोहियों का अब चौराहे पर, भांडा फूटा है।
शत्रु की भी उड़ा रहा है, आज तिरंगा देख मखोल।
शुभ गणतंत्र दिवस हो बोल।

अतिथि भी खुश हुए देखकर, अद्‌भुत छटा आज के दिन।
भूल न पाएगा कोई भी, जन-गण-मन के यह पलछिन।
शौर्य दिवस है आज मना ले, इसे बजाकर ताशे-ढोल।
शुभ गणतंत्र दिवस हो बोल।

आतंकी हर हमलावर के, मिले धूल में मन्सूबे।
भारत के शत्रु की बीच, भँवर में आज नाव डूबे।

इधर-उधर की बात नहीं कर, तू अपनी शक्ति को तोल।
शुभ गणतंत्र दिवस हो बोल।

नक्सल, उग्री, माओवादी, सुन लें आज खोलकर कान।
मिलें मुख्यधारा में वरना, उन्हें मिलेगा सिर्फ मसान।
जागृत है नेतृत्व देश का, आकर अपनी इच्छा बोल।
शुभ गणतंत्र दिवस हो बोल।

बहुत सहन कर लिये लुटेरे, चल अब उन्हें किनारा दें।
निर्बल भूखे देशवासियों को, हर तरह सहारा दें।
बेरोजगारी दूर करेगा, दामोदर मोदी हर मोल।
शुभ गणतंत्र दिवस हो बोल।

हिन्दू राष्ट्र का स्वप्न सुहाना, सच करना है मन में ठान।
विश्व गुरु बनकर अब भारत, पाएगा खोया सम्मान।
हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तानी, पुनः बने शक्ति अनमोल।
शुभ गणतंत्र दिवस हो बोल।

शत्रु की हर धूर्त चाल को, उठ जा निष्फल करना है।
गद्दारों को देशभक्ति, या मृत्यु में इक चुनना है।
गूँजे विश्व समूचा जयहिन्द कहने में अब रहे न झोल।
शुभ गणतंत्र दिवस हो बोल।

**

साथ चलें

आओ हम-तुम साथ चलें।
मन में संभ्रम नहीं पलें।
कपटपूर्ण व्यवहार न हो,
इक दुजे को नहीं छलें।

क्यों हम-तुम विष वमन करें।
दुष्विचार का दमन करें।
अपनी भूल सुधारें हम-
मन की कटुता शमन करें।

सब अपने घर में खुश हों।
हम अपने घर में खुश हों।
मिलें राह में अगर कभी,
आपस में मिलकर खुश हों।

व्यर्थ कभी कुछ बात न हों।
मतलब की अर्थात न हो।
आपस में हम एक बनें,
कुछ कोई प्रतिघात न हो।

देश तभी उत्तम होगा।
सार्थक अपना श्रम होगा।
जात-पाँत मन में लेकर-
कभी नहीं मति भ्रम होगा।

भारत की संतान हो तुम।
हिन्दू, मुस्लिम मान हो तुम।
जन्मे हो जिस माटी में,
उसकी ही पहचान हो तुम।

मिलकर रहो जिओ मिलकर।
तभी जियेंगे हम खिलकर।
मजबूरी में धर्म बदल,
तुम रह गए चाक सिलकर।

अब भी खुद को पहचानो।
कल क्या थे तुम यह जानो।
तुम भी कोई गैर नहीं,
हमको भी अपना मानो।

अपनो पर अब वार न हो।
आतंकी हथियार न हो।
उस पर मेहर नहीं होगी,
जिसके मन में प्यार न हो।

**

स्वीकार करो

फूल ही फूल नहीं जीवन में, काँटें भी स्वीकार करों।
उपवन के माली बनकर, हर वृक्ष-लता से प्यार करो।

निर्बल का बल बनो, सदा तुम अतिथि का सत्कार करो।
सब पर अपना स्नेह लुटाओ, सब पर ही उपकार करो।

फूलों में जीवन का सुख है, शूलों में अनुभव की छाया,
अनुभव की राहों पर चलकर, सपनों को साकार करो।

जैसे तुम हो वैसा मैं हूँ, भेद न मानव-मानव में,
परमात्मा के सभी अंश है, सबसे सम-व्यवहार करो।

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, अपने हैं कुछ गैर नहीं,
रहो संकुचित मत जीवन में, निजता का विस्तार करो।

झूठ और काला धन दोनों, करते आत्मा को कलुषित,
केवल मात्र सत्य ईश्वर है, यह सच अंगीकार करो।

वृक्ष अगर कट गए सभी तो, धरती होनी है बंजर,
वृक्ष कटे ना- वृक्षारोपण हो, ऐसा उपचार करो।

हिन्दी बोलें लिखे-पढ़े हम, केवल हिन्दी अपनाएँ,
हिन्दी बने राष्ट्र की भाषा, कुछ ऐसा सरकार करो।

**

यह गणतंत्र दिवस शुभ हो

इस गणतंत्र दिवस पर आओ, करें शहीदों का वन्दन।
प्राण किए उत्सर्ग जिन्होंने, किया नहीं लेकिन क्रन्दन।

मन्दिर, मस्जिद, चर्च और गुरद्वारे से पहले मित्रो–
एक बने देवालय जिसमें, हो वीरों का अभिनन्दन।

चित्र लगे उसमें राणा के, वीर शिवा के बिस्मिल के–
अश्फाकउल्ला, भगतसिंह को, अर्पित हो रोली चंदन।

लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे नेताजी को याद करें–
सावरकर से देशभक्त का, नित्य वहाँ पर हो पूजन।

टीपू की तलवार वहाँ पर रक्खी हो इक चौकी पर–
चेतक की प्रतिमा देखे तो, रोमांचित हो अंतर्मन।

श्वेत स्फटिक की पिण्डी, गुमनाम शहीदों के हित हो–
जिसको छूकर अपना जीवन, करें देशहित में अर्पन।

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई का कोई भी भेद न हो–
पृथ्वीराज के नीचे हो, अब्दुल हमीद का भी वर्णन।

मन्दिर के बाहर लिक्खा हो, नाम सभी गद्दारों का–
देश लूटने वाले नेताओं का, हो पूरा चित्रण।

उस मन्दिर में गद्दारों का, आना-जाना वर्जित हो–
मोदी जी के हाथों से, हो देवालय का उद्घाटन।

तभी मनाया जाए फिर, गणतंत्र दिवस का यह त्यौहार–
पहले सभी शहीदों का, तन–मन–धन से हो सुमिरन।

यह गणतंत्र दिवस शुभ-शुभ हो, सब शहीद परिवारों को–
गद्दारों के लिए अशुभ हो, देशभक्त सब रहे मगन।

**

तब होगी सार्थक दीवाली

देखो आई शुभ दीवाली, इस तरह मनाओ दीवाली।
हर आँगन में उजियारा हो, हो दूर अमावस्या काली।
जब भूखे पेट नहीं कोई, सोएगा भारतभूमि पर–
तब होगी सार्थक दीवाली, तब होगी सच्ची खुशहाली।

कुम्हलाया कोई युवक न हो, भुखमरी से कोई त्रस्त न हो।
हो बेरोजगार नहीं कोई, बचपन का सपना ध्वस्त न हो।
हर खेत-खेत में झूम उठे, सरसों की, गेहूं की बाली–
तब होगी सार्थक दीवाली, तब होगी सच्ची खुशहाली।

जब बाल श्रमिक, बन्धुआ कोई, मजदूर न होगा भारत में।
जब धौंस-दबंगों से कोई, मजबूर न होगा भारत में।
भारतभू से मिट जाएगी, जनता जीवन की बदहाली–
तब होगी सार्थक दीवाली, तब होगी सच्ची खुशहाली।

गद्दार देश के शनैः-शनैः भारत से निष्कासित होंगे।
जब जेल नहीं आतंकी सब, फाँसी से सम्मानित होंगे।
जयचन्दों और विभीषण की, जब किन्नर पीटेंगे ताली–
तब होगी सार्थक दीवाली, तब होगी सच्ची खुशहाली।

हो मुफ्त चिकित्सा की सुविधा, शिक्षा व्यापार नहीं होगी।
भारत की भूमि पर जिस दिन, भिक्षा आहार नहीं होगी।
जब आरक्षण से तुष्टिकरण से होगा संविधान खाली–
तब होगी सार्थक दीवाली, तब होगी सच्ची खुशहाली।

जब गैंगरेप, तेजाब काण्ड, अपहरण सभी रूक जाएँगे।
जेलों में बन्दी आतंकी, जब फाँसी पर चुक जाएँगे।
घुसपैठ और आतंकवाद, जब नष्ट करेगी माँ काली–
तब होगी सार्थक दीवाली, तब होगी सच्ची खुशहाली।

अब मैत्री वार्ता नहीं घात हो, तो प्रतिघात सुनिश्चित हो।
शत्रु सर पर रणचण्डी का, मृत्यु आघात विनिश्चित हो।
गोली से हम देंगे जवाब, जब-जब शत्रु देगा गाली–
तब होगी सार्थक दीवाली, तब होगी सच्ची खुशहाली।

हो राजनीति व्यवसाय नहीं, क्यों शासन वंशवाद का हो।
अब चार बार से अधिक मंत्रि-सांसद बनना अपवाद न हो।
अब दल विशेष की नहीं, करे संसद जनता की रखवाली–
तब होगी सार्थक दीवाली, तब होगी सच्ची खुशहाली।

**

शुभकामना

नया वर्ष 26 जनवरी तुमको मुझको उनको शुभ हो।
जो सीमा पर डटे हुए हैं, उनका कुछ भी नहीं अशुभ हो।

ईश्वर उनकी करें सुरक्षा, जो भारत रक्षा में तत्पर।
सीमा को छूने से पहले, मार गिराते हैं हर तस्कर।

कोई भी आतंकी जिनके डर से सीमा लांघ न पाता।
जो ऐसा दुस्साहस करता, वह अपने ही प्राण गँवाता।

अभिनन्दन हर उस सैनिक का, जो पाकिस्तानी गोली का।
देता है जवाब, रखता है ध्यान, पैठियों की टोली का।

जो शहीद हो गए देश पर, वह हर सैनिक वंदनीय हैं।
उनका साहस, शौर्य सभी कुछ, पूजनीय है, अतुलनीय है।

उनको भुला नहीं पाएगा, अपने भारत का जन-गण-मन।
उनके हर वीरत्व, कृत्व पर, अर्पित, श्रद्धा, रोली, चन्दन।

अपने सभी सुरक्षा बल को, सेना को मेरा सलाम है।
जिनके कारण अपने का भारत का ऊँचा रहता ललाम है।

✱✱

पुनः अवतरित हो प्रभु

रामराज की कल्पना हो न सकी साकार।
हम अभाग्यवश स्वप्न को, दे न सके आकार।

अग्नि परीक्षा बाद भी, जमा न जब विश्वास।
चली गई सिय मात फिर, धरती माँ के पास।

रामनाम की ओढ़कर चादर आज हितेश।
अनगिन रावण घूमते, धर साधू का वेश।

कैकेयी कारण हुआ, राक्षस कुल अवसान।
दोष वही देते उसे, जिन्हें अल्प है ज्ञान।

राम न तजते अयोध्या जाते ना वनवास।
तब कैसे होता कहो, निश्चर वंश विनाश।

रामनाम के मंत्र से, मिटे रोग-दुख-शोक।
भजो अयोध्यानाथ को जो चाहो सुरलोक।

शरणागत क्षण मात्र में पा जाता है राज।
राम कृपा से प्राप्त हों, सिंहासन औ' ताज।

रामभक्त पर जब कभी, संकट पड़े सुजान।
उसकी तुरत सहायता, करते हैं हनुमान।

पवनतनय का वह प्रिय, जिसके प्रिय श्रीराम।
सुख-सम्पत-शान्ति उसे, मिले मित्र अविराम।

भरत, शत्रुघ्न, लखन हों भाई राम सम चार।
तब घर-घर के बीच में, उठे नहीं दीवार।

राम एक आदर्श हैं, मर्यादा के रूप।
सुचरित्र-उज्जवल-विमल जैसे उजली धूप।

पिता वचन पालन किया, पा माँ-मन आभास।
राक्षस कुल के नाश को, राम गए वनवास।

पापकर्म जब बढ़ गए, चहुँदिशि अत्याचार।
जनजीवन कल्याण को, हुआ राम अवतार।

पुनः वही स्थिति हुई, पुनः बढ़े दुष्कर्म।
पुनः अवतरित हों प्रभु, स्थापित हो धर्म।

**

प्रकटो श्री कृष्ण आज

प्रकटो ब्रजराज कुँवर प्रकटो श्री कृष्ण आज।
जाग्रत कर दो समस्त, देवभूमि का समाज।

सोई है मानवता, जागी है दानवता।
अन्तर्मन कलुष हुये, खोई है पावनता।
विस्मृत दायित्व सभी विस्मृत है कर्मकाज।
प्रकटो ब्रजराज कुँवर प्रकटो श्री कृष्ण आज।

विकृतियाँ हावी हैं कोहरे में भावी है।
बचपन को लील रहा कलयुग मायावी है
पुनः दुष्ट लूट रहे नारी की यहाँ लाज।
प्रकटो ब्रजराज कुँवर प्रकटो श्री कृष्ण आज।

घूम रहे हैं तक्षक अभिमानी अज्ञानी।
अपमानित होते हैं नित्य परिक्षित ज्ञानी।
स्वार्थ के समन्दर में डूब गया रामराज।
प्रकटो ब्रजराज कुँवर प्रकटो श्री कृष्ण आज।

धृतराष्ट्र के समान, अर्पित है अपनों को।
कंस है कुचल रहे, भारत के सपनों को।
दबा रहे लाठी से, विद्वानों की अवाज।
प्रकटो ब्रजराज कुँवर प्रकटो श्री कृष्ण आज।

नित्य यहाँ महाभारत का नाटक खिलता है।
कहीं पुरुष कहीं नग्न नारी शव मिलता है।

भेदभाव जैसे कि कोढ़ में उठी है खाज।
प्रकटो ब्रजराज कुँवर प्रकटो श्री कृष्ण आज।

या तो सब कुछ सुधरे, या सब कुछ नष्ट करो।
काल यवन की भाँति, दण्डित पथभ्रष्ट करो।
छीनों कलुषित स्वराज, भारत को दो सुराज।
प्रकटो ब्रजराज कुँवर प्रकटो श्री कृष्ण आज।

**

अपना जन-गण-मन

इस चुनाव में जीते अपना जन-गण-मन।
अब लुभा न पाए तुमको कोई आकर्षण।

जयचन्द सरीखे गद्दारों पर नजर रहे।
इन तथाकथित ठेकेदारों पर पहर रहे।

तुम भारत भाग्यविधाता हो इतना जानो।
अपने मत की कीमत को प्रियवर पहचानो।

रावण जैसे नेताओं का तुम काल बनो।
लक्ष्मीबाई सी प्रत्याशी की ढाल बनो।

अब कंसराज से छुटकारे की युक्ति मिले।
धृतराष्ट्र सरीखे नेताओं से मुक्ति मिले।

अब्दाली अब भारत में ना घुस पाए।
कोई बाहरी व्यक्ति जीत नहीं जाए।

गर गौरी, गजनी सा नेता जीतेगा।
तो सच मानो सोमनाथ फिर टूटेगा।

हम में अब भी किदवई सरीखे नेता हैं।
वल्लभ भाई से भारत भाग्य प्रणेता है।

अब स्वार्थ किसी का, तुमको डिगा नहीं पाए।
प्रत्याशी स्वच्छ छवि वाला चुनकर आए।

जो थोपा हम पर गया नहीं स्वीकार हमें।
अपना मत करना नहीं आज बेकार हमें।

वह बने विधायक जो अपनों में अपना है।
जिसकी आँखों में बस जनहित का सपना है।

घोटाला करने वाले जीत नहीं पाएँ।
वह भले किसी भी दल का परचम लहराएँ।

जिसने कल धोखा दिया उसे क्यों वोट करें।
अपराधी प्रत्याशी पर खुलकर चोट करें।

हो सावधान मत आँख मूँद मतदान करो।
हो स्वच्छ छवि जिसकी उसको मत दान करो।

वह हार तुम्हारी है गर जीता अपराधी।
भारत अखण्डता में उपजेगी फिर व्याधी।

अब उठो चलो बस, उसकी जीत सुनिश्चित हो।
जिसके हाथों में भारत भाग्य सुरक्षित हो।

**

सिंहासन के लिए

सबकी अपनी-अपनी पीड़ा, सबका अपना-अपना ग़म है।
हर मन के अन्दर पलता है, शंकाओं का गहरा तम है।

अपनों को फुर्सत ही कब है, गैरों की चाहत ही कब है।
सबकुछ है लेकिन जीवन में, देख लिया राहत ही कब है।
जितनी आशा करी समय से, उतना ही पाया-खोया है-
फिर भी तो सन्तोष नहीं है, शायद इसकी आदत कम है।
सबकी अपनी-अपनी पीड़ा, सबका अपना-अपना ग़म है।

आसमान में उड़ते-उड़ते, मंगल ग्रह तक पहुँच गए हैं।
और धरातल में धरती को, पाँव समय के खुरच गए हैं।
ऊँची बहुत छलाँग लगाई, जग में मान प्रतिष्ठा पाई-
लेकिन घनी सफलताओं में, देखी नहीं आँख जो नम है।
सबकी अपनी-अपनी पीड़ा, सबका अपना-अपना ग़म है।

एक दौड़ है शक्ति-सम्पदा, मिला कभी सन्तोष नहीं है।
सब दोषी नंगे हमाम में, कोई भी निर्दोष नहीं है।
एक-दूसरे के कंधे पर, सिंहासन के लिए चढ़ रहे-
देखो कौन बनेगा राजा, सबकी अँगुली में नीलम है।
सबकी अपनी-अपनी पीड़ा, सबका अपना-अपना ग़म है।

काश्मीर में हुई त्रासदी, आया फिर तूफान हुदहुदी।
मृत्यु को अठखेली सूझी, प्राणों में कर गई गुदगुदी।
सरकारें उसको क्या देंगी, जिसका डूबा सभी प्रलय में–
पर जीवित रहने के हित में, मन में पलता सदा भरम है।
सबकी अपनी-अपनी पीड़ा, सबका अपना-अपना ग़म है।

धरती क्या हमसे कहती है, प्रकृति कब तक चुप रहती है।
उससे पूछो जो जीवन भर, बीहड़ जंगल में रहती है।
प्रकृति को यदि क्रुद्ध किया तो, फिर आएगी प्रलय धरा पर–
अन्तरिक्ष से छेड़ मत करो, यह रहस्य भी बड़ा अगम है।
सबकी अपनी-अपनी पीड़ा, सबका अपना-अपना ग़म है।

शठे शाठयम् समीचने

जय घोष करो, उद्घोष करो।
इतने पर मत सन्तोष करो।
है राजनीति जो दोषयुक्त।
उसको बढ़कर निर्दोष करो।

आमूल-चूल हो परिवर्तन।
हो वांछनीय हर संशोधन।
जो भी हित में हो भारत के-
हो संविधान में परिवर्धन।

भारत के हर कार्यालय में।
हिन्दी हो हर न्यायालय में।
अँग्रेजी अब वापस जाए-
इंग्लिशतानी संग्रहालय में।

कुछ ऐसी सरल करो हिन्दी।
अपनाएँ सारे प्रतिद्वंद्वी।
भारत माता के माथे पर-
चमके हिन्दी की ही बिन्दी।

सबकी अपनी-अपनी भाषा।
पूजित हो सदा मातृभाषा।
पर राष्ट्रीय सम्पर्क सूत्र-
हो केवल हिन्दी ही भाषा।

तुम दामोदर, मोदी नरेन्द्र।
बनकर उभरे हो तुम विजेन्द्र।
अब पुनः धर्म संस्थापन को-
शत्रु पर टूटो बन सुरेन्द्र।

अब विश्व पटल पर प्रिय मित्र।
भारत का उभरे नया चित्र।
जनता जाग्रत हो अपनाए-
अब राष्ट्र धर्म उत्तम चरित्र।

वैमनस्य भाव से काज न हो।
फिर कभी कोढ़ में खाज न हो।
मिल जाए अब सच्चा सुराज-
कलुषित माता का ताज न हो।

हो नहीं दुराग्रह दृढ़ निश्चय।
फिर नहीं सफलता में संशय।
नक्सली, उग्र, माओवादी-
आ मुख्यधार में करें विलय।

अब शत्रु सर ना काट सके।
आतंकवाद का शीश झुके।
निर्भीक तुम्हारे निर्णय से-
बंग्लादेशी घुसपैठ रूके।

उत्तर प्रदेश का बँटवारा। क्यों काश्मीर दर्जा विशेष।
हट जाए तीन सत्तर धारा। हो वहाँ औद्योगिक निवेश।
सम्भव है नव निर्माण तभी– दस बार विधायक या सांसद–
'सबका' से पाएँ छुटकारा। क्यों बने एक व्यक्ति हितेश।

हो आरक्षण पर भी विचार। धीरे-धीरे हर बात बने।
हो तुष्टिकरण की जगह प्यार। अब नहीं किसी से रार ठने।
आचार संहिता हो समान– जब सुलझे नहीं समस्या तो–
हर भेदभाव हो दरकिनार। हो शठे शाठयम् समीचने।

✱✱

शुभकामना

शुभकामना दशहरे की है, आने वाली दीवाली की।
हर क्षण हर पल, दस्तक देती, घर द्वारे पर खुशहाली की।

सुख शांति हो व्याप्त जगत में, हो सार्थक वसुधैव कुटुम्बकम्।
मन पावन, बुद्धि निर्मल हो, कृपा करें हम पर त्र्यम्बकम्।
पुनः प्राप्त हो भरत भूमि को, वैभव सम्पद वैशाली की।
शुभकामना दशहरे की है, आने वाली दीवाली की।

नक्सलवादी मिलें मुख्य धारा में मन की पीर बतायें।
उग्रवाद आतंकवाद की, भारत में ना चलें हवायें।
घुसपैठों पर रोक लगे, जो कारण हैं इस बदहाली की।
शुभकामना दशहरे की है, आने वाली दीवाली की।

स्वच्छ हृदय हो, स्वच्छ गगन हो, स्वच्छ धरा हो, स्वच्छ धाम हो।
कोई दाग न हो चादर पर, मन मैला क्यों हो निःकाम हो।
घोटाले का क्यों कलंक हों, मुख पर आभा हो लाली की।
शुभकामना दशहरे की है, आने वाली दीवाली की।

शत्रु की शत्रुता मिटायें, मैत्री भाव जगायें मन में।
धीरज-साहस, देशप्रेम हों, सहनशीलता हो जीवन में।
रहे विशेष कृपा भारत पर, सिंहवाहिनी माँ काली की।
शुभकामना दशहरे की है, आने वाली दीवाली की।

मिटे गरीबी हर प्राणी की, कोई भूखा कहीं रहे ना।
निर्बल की हम करें सुरक्षा, वह दबंग की धौस सहे ना।

स्वयं करें भोजन पर पहले, चिंता हो भूखी थाली की।
शुभकामना दशहरे की है, आने वाली दीवाली की।

खेतों में हर कृषक सुखी हो, भरे रहें खलिहान अन्न से।
उत्पादों के दाम सही हो, गूँज उठे घर छना-छन्न से।
महँगाई नीचे आ जाये, सब्जी खूब बिके माली की।
शुभकामना दशहरे की है, आने वाली दीवाली की।

तुम को शुभ हो मुझ को शुभ हो, यह दीवाली और दशहरा।
दुख के बादल नहीं गगन पर, उगे सुखों का सूर्य सुनहरा।
झूम उठे नभ धरा, विजय हो, अँधियारे पर उजियाली की।
शुभकामना दशहरे की है, आने वाली दीवाली की।

रामराज्य स्थापित हो अब, मोदी की हो सफल तपस्या।
राजनीति उनको दुत्कारे, जिनमें लालच और लपस्या।
धरा मगन हो छटा देखकर, बिखरी निखरी हरियाली की।
शुभकामना दशहरे की है, आने वाली दीवाली की।

**

जागो

जागो नगपति जागो विशाल, जागो त्रिनेत्र हे महाकाल।
आतंकवाद के साये में, बगदादी की है कुटिल चाल।
है घोर व्यवस्थाहीन देश– हावी है तुष्टिकरण राज।
दुष्कर्म-घिनौने बलात्कार, लुटती नारी की नित्य लाज।
आरक्षण में पिट रहा देश, ज्यों कुष्ट रोग में उठे खाज।
जागो देवाधिदेव जागो, कर रहे प्रार्थना नौनिहाल।
जागो नगपति जागो विशाल, जागो त्रिनेत्र हे महाकाल।

वरदान न दो भस्मासुर को– आतंकवाद को नष्ट करो।
जो सिंहासन पर बैठे हैं, इनकी भी अब मतिभ्रष्ट– हरो।
क़ामातुर सभी राक्षसों के, प्राणों को घास समान चरो।
ड्रैगन सीमाएँ लांघ रहा, नापाक ले रहा है उछाल।
जागो नगपति जागो विशाल, जागो त्रिनेत्र हे महाकाल।

दो सद्बुद्धि नेताओं को, गतिमान करो सेनाओं को।
हो मार्ग विजय का अब प्रशस्त, बलहीन करो बाधाओं को।
छुटके-मुटके भैया छोड़ो– मारो इनके आकाओं को।
हों भस्म काम– आसक्त सभी, इस तरह प्रकट हो महाज्वाल।
जागो नगपति जागो विशाल, जागो त्रिनेत्र हे महाकाल।

है दिशाहीन सारा समाज, हैं हम भी कुछ-कुछ उच्छृंखल।
मतिमन्द नयन से अन्ध, नहीं पहचान पा रहे हैं दलदल।
दो दिशा ज्ञान कुछ उनको भी, जिन पर है सत्ता का सम्बल।
भयमुक्त करो सिंहासन को, शत्रु सर बाजे तीन ताल।
जागो नगपति जागो विशाल, जागो त्रिनेत्र हे महाकाल।

**

अंगद हूँ प्रभु श्रीराम जी का

देश पर बलिदान होने को बना हूँ, मैं किसी के प्रेम का आखर नहीं हूँ।
देश-दुश्मन के लिए हूँ शूल तीखा, मैं गुलाबी फूल की पाँखर नहीं हूँ।

भृकुटि जिसकी कुटिल इस ओर होगी, दृष्टि के लायक न छोड़ूँगा उसे मैं।
सोचना मत मेरी सीमा लाँघने की, जिसने लांघी अगर तोड़ूँगा उसे मैं।
मैं कि परशुराम का वंशज खड़ा हूँ, हिमालय की तरह तत्पर और तनकर।
कर दिया सर्वस्व मैंने देश अर्पण, जीऊँगा तो सिर्फ भामाशाह बनकर।

मेरा तन-मन-धन सभी कुछ देश का है, मैं किसी गद्दार का लॉकर नहीं हूँ।
देश-दुश्मन के लिए हूँ शूल तीखा, मैं गुलाबी फूल की पाँखर नहीं हूँ।

शान्त अपने घर रहोगे शान्त हूँ मैं, अन्यथा मैं धनुष की टंकार भी हूँ।
मैं कि केवल शास्त्र का ज्ञाता नहीं हूँ, शस्त्र भी हूँ, तीर भी, तलवार भी हूँ।
कोई भी आतंक या नक्सली हमला, पाँव को मेरे डिगा सकता नहीं है।
मैं कि अंगद हूँ प्रभु श्रीराम जी का, दुष्ट रावण पग उठा सकता नहीं है।

हवाओं के रुख बदलना जानता हूँ, परिस्थिति का दास या चाकर नहीं हूँ।
देश-दुश्मन के लिए हूँ शूल तीखा, मैं गुलाबी फूल की पाँखर नहीं हूँ।

मित्र बनकर आओगे यदि द्वार मेरे, तो तुम्हें सुग्रीव जैसा मान दूँगा।
किन्तु यद जयचन्द बनकर आओगे तो, शीश को फिर मैं तुम्हारे बान दूँगा।
शत्रु को मैं सिर्फ शत्रु मानता हूँ, शठे शाठ्यम सिद्ध है सिद्धान्त मेरा।
मैं सदा स्पष्ट भाषा बोलता हूँ, अर्थ होता ही नहीं अतुकान्त मेरा।

मैं घोटालेबाज सत्ता का भिखारी, यानि कुर्सी के लिए भाखर नहीं हूँ।
देश-दुश्मन के लिए हूँ शूल तीखा, मैं गुलाबी फूल की पाँखर नहीं हूँ।

नक्सली हो तो सखे अब शान्त होकर, मुख्यधारा में जरा आकर मिलो तो।
हो अगर आतंकवादी, मांओवादी, उग्रवादी, चाहते क्या हो जरा आकर कहो तो।

देशहित में माँग होगी उचित जो भी, मान लूँगा मैं यही विश्वास करना।
देश के विपरीत समझौता करूँगा, सोचना मत और न ऐसी आस करना।

मैं अगर चुप हूँ तो निर्बल मत समझना, देख-सुन सबकुछ रहा कायर नहीं हूँ।
देश-दुश्मन के लिए हूँ शूल तीखा, मैं गुलाबी फूल की पाँखर नहीं हूँ।

त्याग दूँगा शत्रुता मैं भी हृदय से, मेरे आँगन में कभी भी झाँकना मत।
जीत तुम मुझसे कभी सकते नहीं हो, झूठ आशा के सितारे टाँकना मत।
अगर मिल-जुल मित्रता से रहोगे तो, सत्य समझो प्रगति दोनों ओर होगी।
जो अँधेरा छा गया है शत्रुता में, मित्रता में याद रक्खो भोर होगी।

तुम भी औरंगजेब खुद को मत समझना, मैं भी समझूँगा शिवा नाहर नहीं हूँ।
देश-दुश्मन के लिए हूँ शूल तीखा, मैं गुलाबी फूल की पाँखर नहीं हूँ।

**

राम विजय का पर्व

राम विजय का पर्व दशहरा शुभ हो शुभ हो, शुभे दिवाली।
परिजन-पुरजन नाचें, गायें, धूम मचायें देकर ताली।

अहंकार पर, काम, क्रोध पर, मर्यादा की जीत हुई है।
सत्य सदा जीवित रहता है, यह सत्यता प्रतीत हुई है।
चोर, लुटेरा, अत्याचारी पौरुष से विहीन होता है।
सफल न होती यात्रा वह जो, धर्म कर्म विपरीत हुई है।

गद्दारों को चिन्हित करना, उन पर तुम विश्वास न करना।
अपना ही उपवन उजाड़ता है जो वह मर जाता माली।

इतने दीप जलाओं जितने आसमान में चाँद सितारे।
श्री गणेश लक्ष्मी अनुकम्पा, ऋद्धि-सिद्धि आयें तब द्वारे।
अँधकार की चादर ओढ़े नक्सल, उग्री या आतंकी,
घूम रहे विस्फोटक लेकर पवन पुत्र इनको संहारें।

सावधान तुम रहो देशहित, देशद्रोहियों, मक्कारों से।
रक्षा करे तुम्हारी रघुवर, राम, कृष्ण, माँ अम्बे काली।

हर मुण्डेर पर दीप जलाओं, हर आँगन फुलझड़ी छुड़ाओं।
अपने बच्चों की खुशियों में, तुम हितेश बच्चें बन जाओ।
गले लगाओं केवल उनको जो परिचित हों पूर्व तुम्हारें।
संदिग्धों पर अजनबियों पर कड़ी नजर पहरा बिठलाओं।

प्रकृति भी है साथ तुम्हारे धरती के आँचल को देखों।
इस कौने से उस कौने तक छाई है सुन्दर हरियाली।

**

क्यों?

क्यों नहीं हो रहे हैं पैदा, अब भगतसिंह या सावरकर।
अश्फाकउल्ला, बिस्मिल, सुभाष, जो जीवित रहते हैं मरकर।
क्या स्वाभिमान मर गया सभी, या देशभक्ति का लोप हुआ–
हम आज अभी क्यों निर्भर हैं, अँग्रेजों की अँग्रेजी पर।

हिन्दी को तज कर किस कारण, अँग्रेजी पर आकर्षित हैं।
जनरल डायर की भाषा पर, हम क्यों सर्वस्व समर्पित हैं।
क्यों परित्यक्ता पत्नी जैसी, हिन्दी बैठी चौराहे पर–
क्यों नहीं हो रहे हैं पैदा, अब भगतसिंह या सावरकर।

क्या तमिलनाडु मिट जाएगा, यदि हिन्दी को अपना लेगा।
या काश्मीर खो जाएगा, गर वन्दे मातरम् गा लेगा।
यह भेदभाव के शूल यहाँ, बो दिए कहो किसने पथ पर–
क्यों नहीं हो रहे हैं पैदा, अब भगतसिंह या सावरकर।

क्या राम हमारे इष्ट नहीं, या कृष्ण विराने हैं हमसे।
इंगलिश पढ़ने-लिखने वाले, क्या अधिक सयाने हैं हमसे।
हिन्दी देवों की भाषा है, क्यों गर्व नहीं हमको इस पर–
क्यों नहीं हो रहे हैं पैदा, अब भगतसिंह या सावरकर।

बलिदान माँगती हो हिन्दी, तो चलो शीश बलिदान करें।
हिन्दी हो राज्य, राष्ट्र भाषा, अँग्रेजी का अवसान करें।
यह शीश कटे हिन्दी हित में, या अब हिन्दी ही छुए शिखर–
क्यों नहीं हो रहे हैं पैदा, अब भगतसिंह या सावरकर।

है स्वयंसिद्ध, है स्वसमर्थ अस्सी प्रतिशत जन की भाषा।
आजादी के दीवानों की, है क्रांतिकारियों की आशा।
हिन्दी की प्राण प्रतिष्ठा को, फिर गूँजे इंकलाब का स्वर–
क्यों नहीं हो रहे हैं पैदा, अब भगतसिंह या सावरकर।

✱✱

अनदेखा मत कर

नीलगगन में रहने वाले, गीता ज्ञान सुनाने वाले।
बहुत हो चुका अब अनदेखा, मत कर भू के धन्धे काले।

सारा वातावरण वही है, द्वापर युग के बीच रहा जो।
हुआ पुर्नजीवित दु:शासन, चीर धरा का खीच रहा जो।
पुनः विपक्षी कौरव सारे, गठबन्धन को हैं आमादा–
एक अकेला है नरेन्द्र अब, किसको देखे, किसको भाले।
बहुत हो चुका अब अनदेखा, मत कर भू के धन्धे काले।

मर्यादा की बातें करके, कर्ण सरिस गद्दार देश में।
मिल बैठे हैं मक्कारों से, घूम रहे जो छद्म वेश में।
शील हरण करते नारी का, कोष लूटते हैं स्वदेश का–
इनसे मुक्त करा भारत को, जो करते आए घोटाले।
बहुत हो चुका अब अनदेखा, मत कर भू के धन्धे काले।

लोकतंत्र की हत्या करके, हावी हम पर वंशवाद है।
अपना जन-गण-मन गिरवीं है, साहूकार परिवारवाद है।
पुत्र-मोह से ग्रस्त सभी को, भारत माँ सुत खटक रहा है–
पुनः सारथी बनकर जड़ दे, गठबन्धन के मुँह पर ताले।
बहुत हो चुका अब अनदेखा, मत कर भू के धन्धे काले।

आतंकी, नक्सलवादी को, अपने ही देते हैं प्रश्रय।
और विदेशी घुसपैठों को, राजनीति ही देती आश्रय।
जनहित और देशहित से हैं- विरत स्वार्थ के वशीभूत हैं–

इनके मन में निष्ठा भर दे, या फिर अपने पास बुला ले।
बहुत हो चुका अब अनदेखा, मत कर भू के धन्धे काले।

मिलता है सम्मान उन्हें जो, नहीं मान करते स्वदेश का।
राजनीति अब गांधारी है, दुर्योधन है सुत नरेश का।
अन्धा बाँट रहा रेवड़ियाँ, 'मेरा क्या' के आदर्शों पर–
प्रतिभा भटक रही सड़कों पर, नंगे पग में लेकर छाले।
बहुत हो चुका अब अनदेखा, मत कर भू के धन्धे काले।

**

रामराज्य स्थापित होगा

धीरे-धीरे युग बदलेगा, और समय परिवर्तित होगा।
नमो–'नमो' की अगुवाई में, रामराज्य स्थापित होगा।
आतंकी– गद्दारों की भी, नाप-तौल अब हो जाएगी–
लौहपुरुष के दृढ़ निश्चय से, अपना भारत शासित होगा।

संविधान परिवर्तन होगा, तुष्टिकरण से मुक्ति मिलेगी।
अब समान आचार संहिता, से समाज को शक्ति मिलेगी।
सच्चा देशभक्त जो होगा, अब वो ही सम्मानित होगा–
नमो–'नमो' की अगुवाई में, रामराज्य स्थापित होगा।

रावण नहीं, दहन होगा अब, भारत में आतंकवाद का।
जन-मन-गण स्थापित होगा, राज न होगा वंशवाद का।
भेदभाव की बात न होगी, जो होगा मर्यादित होगा–
नमो–'नमो' की अगुवाई में, रामराज्य स्थापित होगा।

देशद्रोहियों का जेलों में, अब अतिथि सत्कार न होगा।
न्याय विलम्बित प्रक्रिया से, समझौता स्वीकार न होगा।
सुलभ शीघ्र सस्ता न्यायायिक, प्राविधान सुनिश्चित होगा–
नमो–'नमो' की अगुवाई में, रामराज्य स्थापित होगा।

बहू-बेटियाँ पूर्ण सुरक्षित, निकलेंगी हितेश सड़कों पर।
दुष्कर्मी, तेजाब काण्ड– दोषी के, काटे जाएँगे पर।
बलात्कार की घटनाओं से, देश नहीं अभिशापित होगा–
नमो–'नमो' की अगुवाई में, रामराज्य स्थापित होगा।

अब शासन में जगह न होगी, घोटाला करने वालो की।
पैमाइश होगी कोयले में, मुँह काला करने वालो की।
जनता का अधिकार और कर्त्तव्य, पूर्णतः निश्चित होगा–
नमो–'नमो' की अगुवाई में, रामराज्य स्थापित होगा।

शिक्षा और चिकित्सा सुविधा, रामराज्य की तरह मिलेगी।
महँगाई की जमी बर्फ भी, धीरे-धीरे ही पिघलेगी।
वह सब होगा जो चाहा है, कुछ भी कहीं न कल्पित होगा–
नमो–'नमो' की अगुवाई में, रामराज्य स्थापित होगा।

✸✸

जय हो

आतंकी के मददगार के, पैरोकार महान की जय हो।
न्याय प्रक्रिया के हामी, हर अधिवक्ता विद्वान की जय हो।

जिस कारण हत्यारोपी भी, जेल से बाहर आ जाता है।
अपने न्यायालय की जय हो, ऐसे विधि-विधान की जय हो।

जिनके कारण हिन्दी अब तक, राष्ट्र की भाषा नहीं बन सकी।
ऐसे हिन्द विरोधी चलने वाले, हर अभियान की जय हो।

क्यों तेजाब काण्ड का दोषी, तुरत जमानत पा जाता है।
साक्ष्य और साक्षी दोनों के, बीच फँसे ईमान की जय हो।

मुद्दालेह-मुद्दई मर गए, हड़तालों में न्यायालय की।
दोषी हर व्यक्ति की जय हो, डूब रहे दिनमान की जय हो।

अल्पसंख्यक से बहुसंख्यक को, आपस में जो लड़वाते हैं।
ऐसे नेताओं की जय हो, सारे बेईमान की जय हो।

पहुँच-पूंछ के कारण जिनको, सरकारें करती सम्मानित।
ऐसे हर अयोग्य व्यक्ति को, मिले हुए सम्मान की जय हो।

जो आरक्षण में बन्दी है, तुष्टिकरण जहाँ पर हावी।
अपने भारत के हितेश जी, ऐसे संविधान की जय हो।

शिक्षा और चिकित्सा दोनों, सुविधाओं के भाव बढ़े है।
दोनों से वंचित उपेक्षित्त, जनता के कल्यान की जय हो।

जो स्पष्ट देशद्रोही हैं, या आतंकी पकड़े जाते-
जेलों में बिरयानी खाते, अपने हिन्दुस्तान की जय हो।

न्याय प्रक्रिया भी लम्बित है, न्यायाधीश नियुक्त नहीं हैं।
फिर भी हम आदर्शवाद का, करते हैं गुणगान की जय हो।

**

हम तुम्हारे साथ हैं

तुम चलो आगे बढ़ो- प्रगति के गिरि पर चढ़ो,
हम तुम्हारे साथ हैं, हम सब तुम्हारे साथ हैं।

देशहित में बन पड़े जो भी, सखे वैसा करो तुम,
धमकियाँ आतंकवादी से, नहीं बिल्कुल डरो तुम,
सत्य की ही जीत होगी, धारणा मन में धरो तुम–
हम तुम्हारे साथ हैं, हम सब तुम्हारे साथ हैं।

देशहित में जाग्रत करते रहो, इंसान को तुम,
सदा की भाँति रहो, झकझोरते ईमान को तुम,
कभी देना मत समर्थन, किसी बेईमान को तुम–
हम तुम्हारे साथ हैं, हम सब तुम्हारे साथ हैं।

कोई हत्यारा शहीदाने वतन होता नहीं है,
मौत पर आतंकवादी की, जगत रोता नहीं है,
कभी भी गद्दार से, सम्भाव्य-समझौता नहीं है–
हम तुम्हारे साथ हैं, हम सब तुम्हारे साथ हैं।

जब कभी आवाज दोगे, मैं तुम्हारे साथ हूँगा,
लहू चाहोगे तो वह भी, देशहित में तुम्हें दूँगा,
तुम उठो तूफान से, मैं आँधियाँ बनकर उठूँगा–
हम तुम्हारे साथ हैं, हम सब तुम्हारे साथ हैं।

तुम अगर आनन्द हो तो, मुझे परमानन्द जानो,
तुम अगर हो ज्वाल, मुझको मित्र अग्निपुत्र मानो,

देशहित जो कह रहा हूँ मैं, उसे ही सत्य जानो–
हम तुम्हारे साथ हैं, हम सब तुम्हारे साथ हैं।

जो विरोधी हिन्दी-हिन्दू, और हिन्दुस्तान के हैं,
वह विरोधी देश के हैं, देश के उत्थान के हैं,
बहिष्कृत उनको करो, सच्चे न जो ईमान के हैं–
हम तुम्हारे साथ हैं, हम सब तुम्हारे साथ हैं।

✱✱

लाल किले की ओर चलें

आओ बच्चो, प्यारे बच्चो, लाल किले की ओर चलें।
इस पन्द्रह अगस्त की कैसी, होगी देखें भोर चलें।

आज देशहित या समाजहित, की जो घोषणाएँ होंगी।
कितनी वास्तविकता होगी, कितनी कल्पनाएँ होंगी।
कठिन समस्या सुलझाने को, होगा कैसा जोर चलें।
आओ बच्चो, प्यारे बच्चो, लाल किले की ओर चलें।

बिजली, पानी, महँगाई से, कैसे छुटकारा होगा।
शायद लाल किले से कोई, नया आज नारा होगा।
जिसको सुनकर नाच उठेगा, जनता का मन मोर चलें।
आओ बच्चो, प्यारे बच्चो, लाल किले की ओर चलें।

बेरोजगारी मिटेगी कैसे, उसका क्या उपाय होगा।
ओजपूर्ण भाषण का भैया, कुछ तो अभिप्राय होगा।
शिक्षा और चिकित्सा सुविधा पर क्या होगा गौर चलें।
आओ बच्चो, प्यारे बच्चो, लाल किले की ओर चलें।

आशाएँ हैं बहुत देश को, मोदी जी के आने से।
जनता भी अब भ्रमित न होगी, सबका के भरमाने से।
घोटाला करने वालों को, नहीं मिलेगा ठौर चलें।
आओ बच्चो, प्यारे बच्चो, लाल किले की ओर चलें।

हिन्दू, मुस्लिम झगड़े-दंगे, जो करवाते आए हैं।
आतंकी या गद्दारों से, जो मँडराते आए हैं।

कैसे पकड़े जायेंगे, सारे समाज के चोर चलें।
आओ बच्चो, प्यारे बच्चो, लाल किले की ओर चलें।

लगता है संगठन सभी अब, आतंकी मिट जाएँगे।
चीन, पाक की धमकी के, अब बादल भी छँट जाएँगे।
जाग उठेगा देश लगेगा, जब नारा घनघोर चलें।
आओ बच्चो, प्यारे बच्चो, लाल किले की ओर चलें।

**

इन्कलाब तब आएगा

भारत में जब रामराज्य का, सपना सच हो जाएगा।
आजादी उस दिन सच होगी, इन्कलाब तब आएगा।

जब आतंकी हमलों की, काली आँधी रूक जाएगी।
हिन्दू-मुस्लिम झगड़ों की, जब तनातनी झुक जाएगी।
जो नफरत फैलाते हैं, जनता उनसे मुक जाएगी।
भारत का रहने वाला जब, भारतीय कहलाएगा।
आजादी उस दिन सच होगी, इन्कलाब तब आएगा।

भेदभाव से छूआछूत से, जब हम मुक्ति पाएँगे।
दुष्कर्मो के प्रति हृदय में, पूर्ण विरक्ति लाएँगे।
सबके मन में देशप्रेम की, हो अनुरक्ति गाएँगे।
महँगाई की मार न होगी, हर आँगन मुस्काएगा।
आजादी उस दिन सच होगी, इन्कलाब तब आएगा।

बिजली, पानी सुलभ रहेगा, सबका अपना घर होगा।
दल-बदलु के लिए खुला जब, नहीं किसी का दर होगा।
शत्रु या तो मित्र बनेगा या धड़ पर ना सर होगा।
सारा देश तिरंगे के रंग में, जिस दिन रंग जाएगा।
आजादी उस दिन सच होगी, इन्कलाब तब आएगा।

सस्ता सुलभ न्याय भी होगा, हड़तालों का काम नहीं।
धरना आन्दोलन ना होंगे, कभी लगेगे जाम नहीं।
शिक्षा और चिकित्सा की, सुविधा होगी नीलाम नहीं।
देशप्रेम का गंगाजल, जब हर मन में लहराएगा।
आजादी उस दिन सच होगी, इन्कलाब तब आएगा।

जब जनता की जनता द्वारा, जनता की होगी सरकार।
जब समान आचार संहिता, की बह निकलेगी जलधार।
जब दबंग निर्बल के ऊपर, कर न सकेगा अत्याचार।
राष्ट्र की भाषा हिन्दी को जब, जन-गण-मन अपनाएगा।
आजादी उस दिन सच होगी, इन्कलाब तब आएगा।

जब दुष्कर्म, अपहरण, हत्या, भारत कभी ना झेलेगा।
उन्मादी मजहबी व्यक्तियों, के हाथों ना खेलेगा।
सत्यनिष्ठ रहने की जब, हर नेता कसमें ले लेगा।
तुष्टिकरण, आरक्षण से जब, मुक्त देश हो जाएगा।
आजादी उस दिन सच होगी, इन्कलाब तब आएगा।

राजनीति जब नहीं बनेगी, राज किसी के बापों का।
तब हिसाब देना ही होगा, निज कर्मो का पापों का।
कोई भी स्थान न होगा, राजनीति में साँपों का।
सारी समस्याएँ जनता की, सिंहासन सुलझाएगा।
आजादी उस दिन सच होगी, इन्कलाब तब आएगा।

जब कोई भी अपना सांसद, बेईमान नहीं होगा।
जनप्रतिनिधि जनसेवक होंगे, मन अभिमान नहीं होगा।
रिश्वत या घोटालों का, कोई स्थान नहीं होगा।
कर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ जब, जनमानस हो जाएगा।
आजादी उस दिन सच होगी, इन्कलाब तब आएगा।

काश्मीर से तीन सौ सत्तर धारा जब हट जाएगी।
चीन, पाक के मन में, एल.ओ.सी. की निष्ठा आएगी।
भारतमाता तब गर्वोन्नत होकर शीश उठाएगी।
अमर शहीदों की स्मृति में, भारत शीश झुकाएगा।
आजादी उस दिन सच होगी, इन्कलाब तब आएगा।

✱✱

घनश्याम तुम्हारा वादा है

भारत की पीर हरोगे कब–
बोलो हम धीर धरें कब तक।

झगड़े–दंगों के जख्म झेल, हम रहे दु:शासन हाथ खेल।
डाकू या चोर–लुटेरों से, लुटने से बचती नहीं रेल।
घोटाला करने वालों के, बोलो डालोगे कब नकेल–
हत्यारे– गैंगरेप– आरोपी की, झेलें धमकी कब तक।
बोलो हम धीर धरें कब तक।

आतंकवाद हम झेल रहे, नक्सल हाथों में खेल रहे।
यह सुना कि अपने नेतागण करते इन सबसे मेल रहे।
केवल कुछ ही हैं सत्यनिष्ठ, जो जस–तस जीवन ठेल रहे–
नक्सलवादी या आतंकी, मारेंगे सैनिक बल कब तक।
बोलो हम धीर धरें कब तक।

आजाद सभी हैं नेगागण, गाली–गुफ्तारी देने को।
जेलों से लड़ने को चुनाव, सहयोग माफिया लेने को।
अपराधी और दागियों के, संसद है अण्डे सेने को–
यह वंशवाद का नाग हमें, मारेंगा। दंश कहो कब तक।
बोलो हम धीर धरें कब तक।

घनश्याम तुम्हारा वादा है, सज्जन की पीड़ा हरने का।
करने को धर्म संस्थापित, शिशुपालों का वध करने का।
भर गया घड़ा अब निश्चित हो, दिन पापिष्ठों के मरने का–
इन स्वार्थ सने नेताओं का, हम बोझ उठाएँगे कब तक।
बोलो हम धीर धरें कब तक।

जो बेच रहे हैं देश, चले अब चक्र सुदर्शन भी उन पर।
जनता का ही अब कब्जा हो, नेताओं के काले धन पर।
चुन-चुन कर भ्रष्टाचारी के, अब शीश न रह पाएँ तन पर-
अवतरित तुम्हारे होने की, अब करें प्रतीक्षा हम कब तक।
बोलो हम धीर धरें कब तक।

✱✱

भारती के लिए

जिसको भारत में भाती नहीं भारती, हिन्द में हिन्दुओं के जो प्रतिकूल है।
जिनकी हमने गुलामी सही आज तक, भावना कुछ की क्यों उनके अनुकूल है।

देशभक्तों के बलिदान कितने हुए, तब कटी अपने भारत की परतंत्रता।
काला पानी सहा, झूल फाँसी गए, तब मिली थी हमें मित्र-स्वतंत्रता।
किन्तु सत्ता के लोभी सभी धन्य हैं, जो स्वभाषा को मिल ना सका कूल है।
जिनकी हमने गुलामी सही आज तक, भावना कुछ की क्यों उनके अनुकूल है।

आज भी देश में हिन्दी परित्यक्त सी, ढूँढती-घूमती है, कोई तो मिले।
जिसके साहस से हर गाँव में, शहर में, पुष्प हिन्दी का हिन्दोस्ताँ में खिले।
देश में आंग्ल भाषा का उपयोग ही, विश्व से पूछिए इक बड़ी भूल है।
जिनकी हमने गुलामी सही आज तक, भावना कुछ की क्यों उनके अनुकूल है।

विश्व में जो भी छोटे बड़े देश हैं, अपनी-अपनी ही भाषा है सबके यहाँ।
सबको अपनी स्वभाषा प्रिय है बहुत है, उधारी की भाषा न प्रचलित वहाँ।
आज तक हावी हम पर है अँग्रेजीयत, और हिन्दी के ऊपर जमी धूल है।
जिनकी हमने गुलामी सही आज तक, भावना कुछ की क्यों उनके अनुकूल है।

क्रांति हो पुनः हिन्दी हित के लिए, हो कि जनजागरण भारती के लिए।
राष्ट्रभाषा सिंहासन सजे भारती, हों सभी हाथ में आरती के दिए।
अपनी भाषा पढ़ें और बोलें लिखें, विश्व का यह नियम हस्ब-मामूल है।
जिनकी हमने गुलामी सही आज तक, भावना कुछ की क्यों उनके अनुकूल है।

जैसे अँग्रेजीयत थोपी हम पर गई, भारती के लिए भी वही बात हो।
घात मैकाले द्वारा जो थी कल हुई, आज अँग्रेजीयत पर वही घात हो।
आंग्ल भाषा को सर पर लिए घूमना, मातृ भू के हृदय में चुभा शूल है।
जिनकी हमने गुलामी सही आज तक, भावना कुछ की क्यों उनके अनुकूल है।

**

नोट बन्दी आवश्यक भी थी

नोटबन्दी के हैं विरोध में, कालेधन के चोर सयाने।
अभिनेता कर रहे समर्थन, नेताओं ने डण्डे ताने।

इस बन्दी के लाभ बहुत हैं, समझ रहे हैं सभी सयाने।
केवल नेता लगे हुए हैं, अपनी नेताई चमकाने।
कालेधन के शव को भी अब, नहीं आएँगे लोग उठाने।

कालाधन निष्क्रिय करने को, नोटबन्दी आवश्यक भी थी–
बन्द किए पांच सौ, हजार के नोट नीति यह सार्थक भी थी।
आतंकी नक्सलवादी भी अपने तम्बू लगे उठाने।

इस बन्दी के हैं विरोध में, कालेधन– काले दिल वाले।
शोर मचाते घूम रहे हैं, सब कालेधन के रखवाले।
भ्रष्टाचारी सब नेतागण, लगे हैं जनता को भड़काने।

धीरे-धीरे अपनी जनता, बन्दी का गुण समझ रही है।
बुझे हुए हैं चेहरे जिन पर, कालेधन की चमक रही है।
ईमानदार जो बने हुए थे, जनता ने भी अब पहचाने।

अब चुनाव में वोटों की, बिक्री-खरीद भी रूक जाएगी।
बेईमान सभी लोगों की, खड़ी पताका झुक जाएगी।
अब ईमानदार समझेगा, सत्य और निष्ठा के माने।

जो कालेधन के विरुद्ध थे, आज नोटबन्दी विरुद्ध हैं।
कालेधन पर काला साया, देख-देख हो रहे क्रुद्ध हैं।
सच्चे, सज्जन, सत्यनिष्ठ ही इस बन्दी पर हैं हर्षाने।

रिश्वतखोरी, चोरबाजारी, सब पर अंकुश लग जाएगा।
झूठा और लफंगा नेता, जनता को ना ठग पाएगा।
कालेधन का हर गुलाम अब, जाएगा बस चने भुनाने।

सस्ता, सुलभ न्याय भी होगा, महँगाई भी घट जाएगी।
अब अमीर के ओ' गरीब के, बीच्च की खाई पट जाएगी!
भ्रष्टाचारों को जनता के, सहने पड़ेगे कल को ताने।

मोदी जी चिन्तित मत होना, अडिग, अचल रहना निर्णय पर।
थोड़ी देर रहा करता है, हर अँधियारा सूर्य उदय पर।
आज तुम्हारे साथ खड़ा है, सारा भारत सीना ताने।

✸✸

एक दीप उनके भी नाम का

अबकी यह दीवाली इस तरह मनाएँ हम।
सीमा पर पहुँचाएँ शुभ-सुकामनाएँ हम।

सीमा की रक्षा में सीमा सुरक्षा बल।
कर देता आतंकी घुसपैठों को निष्फल।
चलो चलें उनका भी, हौंसला बढ़ाएँ हम।
खील, मिठाई, खुशियाँ संग में ले जाए हम।

देश की सुरक्षा में हर शहीद सैनिक को।
घर पर जाकर उसके, श्रद्धांजलि दे उसको।
ऐसे हर परिजन को, ढाँढस बधाएँ हम—
एक दीप उनके भी, नाम का जलाएँ हम।

देशभक्त सैनिक के, साथ खड़े होकर हम।
अपने सर पर ले लें, उसके सारे ही गम।
अपना कर्त्तव्य देश के प्रति निभाएँ हम—
जयचन्द, विभीषण से, देश को बचाएँ हम।

हमको, तुमको सबको, यह दीवाली शुभ हो।
विश्व में जो अपने हैं, उन सबको भी शुभ हो।
आतंकी रावण की, लंका जलाएँ हम—
काला हर अँधकार, आओ मिटाएँ हम।

एक दीप उनके भी नाम का जलाएँ हम।
अबकी यह दीवाली, इस तरह मनाएँ हम।

**

जिन्दाबाद

जिन्दाबाद हमारी सेना, जिन्दाबाद सुरक्षा बल।
जो आतंकी घुसपैठों को, रोज कर रहे हैं निष्फल।

गर्वोन्नत है आज हिमालय, अपनी सेना के बल पर।
भारी है जो आतंकी पर, शत्रु के हर इक छल पर।
सावधान अपनी सेना करती शत्रु की चाल विफल–
जिन्दाबाद हमारी सेना, जिन्दाबाद सुरक्षा बल।

सैनिक जाग रहे सीमा पर, जिससे हम सुख से सोएँ।
तन–मन–धन कर रहे न्यौछावर ताकि हम कुछ ना खोएँ।
सरदी, गरमी झेल रहे हैं, सीमा पर चैतन्य सबल–
जिन्दाबाद हमारी सेना, जिन्दाबाद सुरक्षा बल।

जहाँ रक्त जम जाए बर्फ से, वहाँ रहें यह अडिग खड़े।
लौहपुरुष, यह सिंहपुरुष हैं, अस्त्र–शस्त्र कर में पकड़े।
यह सशक्त हैं इनके कारण, बढ़ा देश का आत्मिक बल–
जिन्दाबाद हमारी सेना, जिन्दाबाद सुरक्षा बल।

सर्वश्रेष्ठ है शौर्य हमारी सेनाओं का निस्संदेह।
इनका जीवट देख शत्रु के प्राण छोड़ देते हैं देह।
यह इतने चैतन्य कि शत्रु हरसू रहता है असफल–
जिन्दाबाद हमारी सेना, जिन्दाबाद सुरक्षा बल।

भूख, प्यास, निंद्रा का इनको, होता है अहसास नहीं।
घर से बहुत दूर रहकर भी, उसकी चिन्ता पास नहीं।

दुश्मन सीमा लांघ न पाए, यह चिन्ता रहती हरपल–
जिन्दाबाद हमारी सेना, जिन्दाबाद सुरक्षा बल।

अभिवादन है हर सैनिक का, हर सैनिक का अभिनन्दन।
भारत का हर देशभक्त, हर क्षण करता इनका वन्दन।
इन कारण गद्दारों के भी, मन में रहती है हलचल–
जिन्दाबाद हमारी सेना, जिन्दाबाद सुरक्षा बल।

जो शहीद हो गए देश पर, उनको है करबद्ध प्रणाम।
श्रद्धा सुमन उन्हें अर्पित हैं, ईश्वर दे उनको निजधाम।
उनके परिजन को भगवन दें, दुख सहने की शक्ति सबल–
जिन्दाबाद हमारी सेना, जिन्दाबाद सुरक्षा बल।

राजनीति का खेल, शाहदत पर कोरी गद्दारी है।
देशभक्त कहलाने का वह, मानुष ना अधिकारी है।
कटु आलोचना करने वाले, करते सेना को निर्बल–
जिन्दाबाद हमारी सेना, जिन्दाबाद सुरक्षा बल।

✱✱

परिचय

1. **नाम– हितेश कुमार शर्मा**

2. **पिता का नाम–** डॉ. आर.पी. शर्मा

3. **माता का नाम–** स्व. श्रीमती रामसुमरनी शर्मा

4. **शिक्षा–** बी.काम., एल.एल.बी (एडवोकेट)

5. **पत्नी का नाम–** श्रीमती ऊषा शर्मा

6. **पुत्रगण–** तपेश शर्मा अधिवक्ता, ललित शर्मा अधिवक्ता, आशुतोष शर्मा प्राकृतिक चिकित्सक एवं व्यवसाय तथा विदुर भारद्वाज, कमाण्डेन्ट सी0सु0ब0

7. **जन्म तिथि** –30 दिसम्बर सन 1936

8. **प्रकाशन**–स्वरचित कविताओं के 19 संकलन प्रकाशित तथा सामूहिक 15 काव्य संकलन संपादित व्यंग्य पुस्तक **हम आज़ाद हैं;** समसामयिक लेख **जनता जाग्रत हो** तथा लघु पुस्तिकाएँ **महँगाई की मार व खामोश सरकार सो रहे हैं** तथा **हमारी न्यायिक व्यवस्था, भ्रष्टाचार कहाँ है, प्रजातंत्र कहाँ है, यह देश किसका है, यक्ष प्रश्न (प्रलय चार वर्ष बाद क्यों), जय हो हिन्दुस्तान की, अत्र तत्र जनतंत्र, सत्यम शिवम सुन्दरम, बेटियाँ, कैकेयी, दादी सीधी सादी थी, मैं गजल हूँ, फर्जन्दे काश्मीर, मैं स्वयंभू** तीन शोध–पत्र स्वीकृत एवं प्रकाशित।

9. **संपादन–** ब्राह्मण अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

10. **व्यापार कर कानून** पर 11 पुस्तकें लिखीं। इसके अतिरिक्त भिन्न–भिन्न विषयों पर लगभग 17 पुस्तकें लिखी और प्रकाशित की।

11. **विशेष सम्मान**–1. ए.बी.आई. यू.एस.ए.द्वारा **मैन ऑफ दी इयर 2000** की उपाधि 2. इन्टरनेशनल नैचरोपैथी इन्सटीट्यूट द्वारा **डाक्टर** की उपाधि 3. रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय मण्डल 3100 के **गवर्नर** (98–99)

12. **साहित्यिक सम्मान**–भिन्न–भिन्न संस्थाओं द्वारा अब तक 206 सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

सम्पर्क– गणपति भवन, सिविल लाइन्स, बिजनौर–246701 (उ0प्र0)
फोन.–01342–262085 मो0–9319935979

आभार

१. श्रीमती उषा शर्मा (पत्नी श्री हितेश कुमार शर्मा)
२. श्रीमती पूनम शर्मा (पत्नी श्री उमेशचन्द्र शर्मा, मेरठ)
३. श्रीमती पुष्पा भारद्वाज (पत्नी स्व० वेदप्रकाश भारद्वाज, मेरठ)
४. श्रीमती कुसुम शर्मा (पत्नी स्व० रामअवतार शर्मा, साहिबाबाद)
५. श्री अजय शर्मा (पुत्र स्व० सुरेशचन्द्र शर्मा, कानपुर)

उपरोक्त सभी के प्रति मैं आभारी हूँ क्योंकि इनके सहयोग के बिना पुस्तक पूरी नहीं हो सकती थी। स्व0 श्री सुरेशचन्द्र शर्मा का फोटो व जीवन परिचय तालाश करने में जो प्रयास और तत्परता आवश्यक थी वह इन सबके द्वारा की गई।

–हितेश कुमार शर्मा


हितेश कुमार शर्मा-श्रीमती उषा शर्मा